ग्रालैन सेक्सन

हवाईनाव

दि एलेक्ट्रिक एयर-केनो

नामक

अंगरेजी उपन्यास

बाबूगङ्गाप्रसादगुप्त-अनुवादित

जिसे

भारतजीवन के अध्यक्ष बाबू रामकृष्णवर्म्मा
ने अनुवादक से सम्पूर्ण अधिकार ले निज
व्यय से छपवा कर प्रकाशित किया ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सन् १९०३ ई०

प्रथम बार ११००] [मूल्य ।)

पहला प्रकरण ।

कहानी दक्षिणीय अमेरिका देश की है । ऊँची ऊँची पर्वतमालाओं के बीच मनोहर वृक्षों से घिरा हुआ रोडस-टाउन नामक एक छोटा सा नगर है । इस नगर के बसाने वाले रोड साहब थे, जिन्होंने अपने बुद्धिबल से अनेक उपयोगी कलें तय्यार करके बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की थी । भाफ के ज़ोर से चलनेवाले आदमी और घोड़े बनाने के बाद उम्र अधिक हो जाने पर वह विश्राम करने लगे थे। उनके लड़के ने उनका आसन ग्रहण किया था; लड़के का नाम "रोड जून" था ।

छरहरे बदन, सुन्दर स्वरूप और तीक्ष्ण बुद्धि का जून भी अपने पिता की तरह नई नई कलों का निर्माण कर संसार को चकित कर चुका था । एक दिन यह आश्चर्य समाचार दूर दूर तक फैल गया कि जून ने हाल ही में बिजली की एक बड़ीही विचित्र "हवाईनाव" तय्यार की है ।

बिजली की हवाईनाव का आकार साधारण नाव जैसा था। नाव की तख़ावन्दी की चौड़ाई १४ फ़ीट और लम्बाई १०० फ़ीट थी। तख़ावन्दी पर एक कोठरी बीच में, और दो नाव की दोनों हद पर बनी थीं। तीनों कोठरियों में बिजली की नाव के उड़ानेवाले यन्त्र और भ्रमण के निमित्त अन्य उपयोगी वस्तुयें थीं। नाव के किनारे किनारे लोहे का जँगला लगा था, और एक हद पर एक छोटी सी तोप भी लगी थी। सब मिलाकर "हवाईनाव" एक बड़ीही सुन्दर और आश्चर्यप्रद चीज़ थी।

कुछ समय पहले कुछ लोग ब्रेज़िल (अफ्रिका) के एक भाग को देखने गए थे। उस दल के केवल एक आदमी ने जीवित लौटकर अपनी जानकारी का विचित्र वृत्तान्त सुनाया था। ब्रेज़िल का वह भाग महाभयानक जंगली जन्तुओं का निवासस्थान है। उसी स्थान के बीच में एक घाटी है। घाटी जवाहिरों से भरी हुई है। १२० आदमियों का दल घाटी तक पहुँचा था, पर वहां से जान लेकर लौट आनेवाला एक आदमी वहां के दो तीन हीरे ले आया था; उन्हीं से वह मालामाल हो गया, किन्तु रास्ते की जो डरावनी कहानी उसने सुनाई थी, उसको सुनकर किसी को वहां जाने की हिम्मत नहीं हुई। जून ने उसी जवाहरात की घाटी तक पहुंचने और असंख्य विघ्नों से बचने के

लिये यह विचित्र हवाईनाव तय्यार करके इसी पर सहस्र कोस की यात्रा करनी स्थिर की थी ।

दूसरा प्रकरण ।

प्रातःकाल का समय था । जून के घर के सामनेवाले मैदान में बड़ा कोलाहल मचा हुआ था । आजही के दिन बिजली की हवाईनाव उड़ने को थी । नाव, मैदान में एक चबूतरा बनाकर उसी पर रक्खी गई थी । हजारों आदमी नाव के उड़ने का तमाशा देखने के लिये मैदान में एकत्र थे । कुछही देर के बाद प्रतिष्ठित नगरवासियों सहित जून के वहां आने पर दर्शकों ने बारम्बार हर्षनाद किया । जून को एक मानपत्र (Certificate of Honour) दिया गया । सम्मान के लिये तोपें दागी गईं, और बाजे मधुर स्वरों में बजने लगे ।

जून के दो नौकर पोम्प और बार्नें नाव में पहले ही से सवार थे । बार्नें गोरा विलायती था, और पोम्प अफ्रिका देश का काला हबशी था । दोनों हँसोड़, आज्ञाकारी और बलवान थे । दोनों ने जून, और जून के पिता गेड की सेवा की थी । उनकी बनाई हुई हरएक कलों में दोनों ने काम किया था । बहुत दिनों तक आविष्कर्ताओं की सेवा करते रहने के कारण दोनों बिजली के यन्त्रों को काम में

लाना अच्छी तरह सीख गए थे। वार्नें उस कल पर हाथ रक्खे खड़ा था, जिसके हिलाने से नाव उड़ती थी। वह आज्ञा की बाट जोहता था।

जून ने एक बेर दर्शकों को सलाम किया, और जँगला पार करके नाव में आया; वार्नें को इशारा किया; कल घुमा दी गई; पहिया चर्चरा कर घूमने लगी; बिजली की सनसनाहट हुई; हवाईनाव एक क्षण के लिये डगमगाई; पश्चात् उछलकर वायु में ऊँची हो गई। दर्शकगण पागलों की तरह चिल्ला उठे। तोपें दागी गईं; और जून ने हवाई-नाव पर से अपनी तोप का एक फ़ायर किया। तब हवाई-नाव ने दक्षिण ओर का रुख किया, और एक घण्टे के बाद रोड्सटाउन आँखों से एकबारही लोप हो गया।

बहुत बड़ी यात्रा आरम्भ हुई। हवाईनाव चिड़िये की तरह वायु काटती उड़ी जाती थी। जून ने बड़ी निश्चिन्तता से कहा—"अब हमलोग निश्चय जवाहरात की घाटी तक पहुंच जायँगे।"

वार्नें। अवश्य पहुँचेंगे; पर जून महाशय। देखिये वह क्या है?

जून ने ठीक सामने लगभग दो मीलों के अन्तर पर वायु में एक चीज़ देखी। वह हलके हलके बादलों के टु-कड़ों के बीच उड़ती दिखाई देती थी। जून ने बड़े आश्चर्य से कहा—"वह एक गुब्बारा है; और देखो इसी ओर चला आ रहा है।"

यह कह तत्त्वण जून कोठरी में से दूरबीन निकाल लाया। दूरबीन से देखने के बाद उसे निश्चय हो गया कि हवा का बहाव गुब्बारे को इसी ओर ला रहा है।

बार्न ने पूछा —"गुब्बारे में कोई आदमी भी है?"

जून। हां, और देखो वे हाथाबाहीं भी कर रहे हैं।

सचमुच उतने अन्तर पर से भी दो मनुष्य घातक लड़ाई में लगे दिखाई देते थे। एक दूसरे को गुब्बारे से गिरा देने का उद्योग कर रहा था। गुब्बारा हिचकोलें लेता हुआ बड़े भयानक रूप से इधर उधर झूल रहा था। जन से नहीं रहा गया; उसने बार्न से हवाईनाव को गुब्बारे की ओर ले चलने के लिये कहा।

हवाईनाव का रुख तुरन्तही बदल दिया गया; गुब्बारा जल्दी जल्दी नज़दीक होने लगा; दो मील पलक झपकते ते हो गए। तब गुब्बारे में की विकट लड़ाई स्पष्ट दिखाई देने लगी। बिजली की नाव से गैस से, भरा गुब्बारा मिल जाने से गुब्बारे की दुर्दशा का ध्यान करके जून ने हवाईनाव को गुब्बारे से १०० फीट ऊपर ठहरा दिया। अब वह गुब्बारेवालों को सहायता देने के बारे में चिन्ता करने लगा; अन्त में वह जँगले पर झुक कर चिल्ला के बोला कि—"बेवकूफी की लड़ाई से बाज़ आओ; क्या तुम्हें नहीं मालूम कि तुम दोनों मरोगे?" इसकी बात पर एक आदमी ने निगाह उठा कर हवाईनाव को देखा; उसकी चे-

हरे से आश्चर्य और घबराहट के चिन्ह दिखाई दिए, किन्तु सहसा उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी को इस ज़ोर से एक घूंसा मारा कि वह चक्कर खा अचेत होकर गिर पड़ा। झगड़ा समाप्त हो गया। विजयी खड़ा होकर हाँफने लगा। जून ने पुकार कर कहा—"तुम कहां के रहनेवाले हो?"

विजयी—आप कौन हैं?

जून—मेरा नाम "फ्रेङ्क रीड जून" है।

विजयी—उड़नेवाली कल के निर्मेता?

जून—हां।

विजयी—मैंने आपका नाम सुना है। परमेश्वर ने आप को ठीक समय पर भेजा। मैं गत बारह घण्टों से एक पागल के फेर में पड़ा हूं; आप मेरे प्राण की रक्षा कीजिए, मैं सब हाल आपसे कहूंगा।

जून ने नाव के जँगले से बाहर आकर रेशम की एक सुदृढ़ सीढ़ी गुब्बारे तक लटका दी, और कहा—"इस सीढ़ी को पकड़ कर जल्द ऊपर चढ़ आओ, क्योंकि मैं देखता हूं कि गुब्बारा फट कर गैस निकल रही है।

गुब्बारेबाज़ विजयी ने हाथ पसार कर सीढ़ी पकड़नी चाही, किन्तु उसी क्षण एक आवाज़ आई! वह विशाला-कार गुब्बारा फट गया, और लुक्क की तरह सीधा पृथिवी की ओर चला!!

तीसरा प्रकरण ।

जून, वार्ने और पोम्प तीनों बहुत दुःखित हुए, और हवाईनाव के जंगले के पास आकर गुब्बारे की चाल देखने लगे। पृथिवी मीलों के अन्तर पर थी। गुब्बारा सीध बांधे बड़े वेग से नीचे को चला जा रहा था। हवाईनाववालों ने समझा था कि गुब्बारा ज़ोर से पृथिवी से टकरायगा, उस समय गुब्बारेबाज़ों की अवश्य मृत्यु होगी, किन्तु उसी क्षण वार्ने बोल उठा—"देखो देखो, वे अवश्य जल में गिरेंगे।"

गुब्बारे के ठीक नीचे एक बहुत बड़ी झील थी। जून समझ गया कि गुब्बारा झील के मध्य भाग वा उसी के आसपास कहीं गिरेगा। तत्क्षण आज्ञा दी गई—"जल्दी हवाईनाव को नीचे की ओर ले चलो।"

आज्ञानुसार कल घुमा दी गई, और अब हवाईनाव जल की ओर झपटी। इसके पहुंचने से पहले ही गुब्बारा झील की सतह तक पहुंच गया था, और दोनों गुब्बारेबाज़ पैर रहे थे (क्योंकि वह पागल भी अब सचेत हो गया था)। झील के सुविस्तृत होने के कारण उनका किनारे पर पहुंचना असम्भव था, अतः जून ने चिन्तायुक्त स्वर में वार्ने से कहा—"अब बिलकुल समय नहीं है; हवाईनाव को तेज़कर नीचे ले चलो।"

अब हवाईनाव भील की सतह से ३०० फीट की ऊँ-चाई पर ठहरा दी गई; रेशम की सीढ़ी लटकाई गई; दोनों पैराकों ने उसको देखा, और वे उसके द्वारा ऊपर खींच लिये गए।

इस समय पागल भी अपने होश में आ चुका था। उ-सने कहा—"धन्य है ईश्वर कि जिसकी कृपा से हमलोग बच गए" इसके अनन्तर वह सहसा विस्मित् हो अपना माथा टटोल कर बोला—"यह क्या है? क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं!"

उसका साथी बोला कि—"नहीं, जो कुछ तुम देख रहे हो वह बिलकुल सत्य है। क्या तुम्हें स्मरण नहीं है कि तुम उन्मत्त होकर मेरी जान लेने पर उद्यत हुए थे?"

वह बोला—"नहीं तो! यह आप क्या कह रहे हैं?"

उसका साथी—जो कुछ मैं कहता हूं वस्तुतः उसका एक एक शब्द सत्य है। यदि मैं तुम्हारे सिर को कस कर न बाँध देता तो तुम मुझ को गुब्बारे पर से नीचे गिरा देते।

इस पर वह और भी विस्मित हुआ। पश्चात् बोला कि "अवश्य ही पतली हवा के असर ने मुझ को पागल बना दिया होगा।"

उसका साथी—हां, यही बात थी, परन्तु हमलोग बच

गए, इस वास्ते ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। और मैं समझता हूं कि अब हमलोग पुनः गुब्बारे की यात्रा करने का उद्योग न करेंगे।

जून इन दोनों की बातें सुनकर समझ गया कि मस्तिष्क पर पतली हवा का असर पड़ने से मनुष्य उन्मत्त हो जाता है, और यही कारण है कि दो गुब्बारेवालों में से एक पागल हो गया था। तब जून ने उस होश में आए हुए पागल के साथी से कहा—"तो आपका साथी जन्म का पगला नहीं है?"

वह—जी नहीं। किन्तु मैं आशा करता हूं कि आप मुझ को क्षमा करेंगे, और मेरा परिचय सुन लेंगे। मेरा नाम अलन ग्रे है। मैं लैटिन भाषा का प्रोफेसर हूं; और यह मेरे सहकारी डाक्टर हेनरीहेन्स हैं।

जून—आप लोगों से मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। क्या मैं अपना परिचय दूं?

अलन ग्रे—मैं आपको भली प्रकार जानता हूं; आप उड़नेवाली कल के निर्मेता हैं। अब यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं यह भी कह डालूं कि किस तरह हमलोगों में लड़ाई शुरू हुई।

जून—बहुत अच्छा; कहिए।

अलन ग्रे—गुब्बारा हमीं लोगों का बनाया हुआ है।

हमलोग विज्ञानसम्बन्धी कुछ बातें पतली हवा में जाँच रहे थे कि इतने में उतरने चढ़ने का रस्सा टूट गया, उसी समय यह भी पागल हो गए; शेष हाल आपको मालूम ही है। अब हमलोग आपको हृदय से धन्यवाद देते हैं, क्योंकि आपने हमारी जान बचाई है।

जून—यह तो कोई बात नहीं थी; मैं बहुत प्रसन्न हूं कि आप लोगों के काम में आ सका।

इसके अनन्तर जून ने उनको हवाईनाव का प्रत्येक भाग अच्छो तरह दिखलाया। दोनो वैज्ञानिक उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुए, और जून तथा जून की कारीगरी की सराहना करने लगे। तब जून ने पूछा—"महाशय! अब मैं आपलोगों को किस जगह उतारूँ?"

ग्रे०—मेरी तो यह इच्छा थी कि आपके साथ साथ आप की सेवा में जवाहरात की घाटी तक चलता।

जून—यह तो नितान्त ही असम्भव है।

ग्रे०—खैर, कोई चिन्ता नहीं; मैं यही चाहता हूं कि आप सफलमनोरथ हों। अच्छा तो आप हमलोगों को झील के दूसरे छोर पर स्टलिङ्ग नामक ग्राम में उतार दीजिए। वहां से हम दोनों सकुशल घर पहुँच जायँगे।

जून०—बहुत अच्छा।

हवाईनाव थोड़ी देर में उपरोक्त ग्राम में उतारी गई, और दोनों वैज्ञानिक वहां से विदा हुए।

पुनः हवाईनाव आकाश की ओर उड़ाई गई, और दक्षिण दिशा को चली। फिर कोई गुब्बारा नहीं दिखाई दिया। दो दिन के पश्चात् मेक्सिको की खाड़ी दृष्टिगत हुई। कुछ ही घण्टों के उपरान्त ये लोग एक ऐसे स्थान से ऊपर ही ऊपर जाने लगे जहां जल ही जल दिखाई देता था; थल का भाग बहुत कम था। हवाईनाव सीधे पश्चिमीय भारत के छोटे छोटे अनेक निर्जन द्वीपों को पार करती हुई चली जा रही थी। एक दिन पृथिवी का बड़ा खण्ड दिखाई पड़ा; जून ने इसको वेंजुएला का किनारा बतलाया। यहां पर हवाईनाव आकाश से कुछ नीचे उतर कर पृथिवी के ऊपर ऊपर जाने लगी।

ऊबड़ खाबड़ महा भयंकर बीहड़ चट्टानों का किनारा दिखाई दिया। यहां पर गर्मी बहुत पड़ती थी। जून और उसके साथियों ने खुखुड़ी की टोपी और हलके कपड़े पहिन लिये। ये लोग ओरिनो नदी से बहुत दूर नहीं थे; उसके देखने की सबकी सलाह हुई; अतएव हवाईनाव का मुंह किञ्चित् पूरब की ओर फेरा गया, और यह लोग न्यूनाधिक १०० मील तक बराबर इसी तरह चले गए। दूसरे दिन सबसे पहले वार्न ने उस बड़ी नदी का मुहाना देखकर सबको दिखलाया।

हमारे यात्रियों ने उस मनोहारी दृश्य को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। सहस्त्रों भागों में विभक्त होकर यह विशाल नदी बड़े बड़े भयानक जंगली स्थलों को पीछे छोड़ती, अनेक राज्यों और सल्तनतों के बीच होती हुई चली गई है।

अब हवाईनाव नदी से दूर की गई। बड़े बड़े नगर पीछे छूट गए; उनमें से एक में एक सुविशाल दुर्ग था। दुर्गवालों ने इनको लक्ष्य करके तोप की बाढ़ दागी, किन्तु ये लोग बहुत ऊँचे पर थे, इस कारण इनको कोई क्षति न पहुंच सकी। दुर्गवाले हवाईनाव को देखकर आश्चर्य और डर से चिल्ला रहे थे, और जून तथा उसके साथी उन पर हँस रहे थे।

हवाईनाव अब उस देश को पार कर रही थी जहां झुण्ड के झुण्ड काले हब्शी खेतों में काम कर रहे थे। दिन भर हवाईनाव तेजी के साथ चली गई। सभ्य देश पीछे छूटा। भयानक जाति के मनुष्य दृष्टिगत हुए। दर्रों, खोहों और जंगलों से ढँका हुआ पहाड़ी देश आगे आया। जल की बड़ी बड़ी धाराएँ घोरनाद से गिरती हुई प्रायः अधिकता से दीख पड़ने लगीं।

हवाईनाव इस समय एक नदी के ऊपर ऊपर जा रही थी। अकस्मात् एक आश्चर्यमयी घटना संघटित हुई! नदी के आर पार एक प्रकार के लचीले वृक्ष की छाल का रस्सा

घट कर पुल बनाया गया था। दक्षिणीय अमेरिका की जंगली जातियाँ बड़ी से बड़ी नदियों को रस्सी के ऐसे ही पुलों के द्वारा पार किया करती हैं। रस्सी का पुल देखकर वार्न ने कहा—"उस पुल की ओर देखिए; कैसी अच्छी बनावट है।"

जून—हां, लेकिन ओह! उधर देखो।

दोनों ने देखा कि जंगली जाति की एक स्त्री पुल को पार करने चली है। उस स्त्री का आधा शरीर नङ्गा था। वह अनुमान आधा पुल पार कर चुकी थी कि सहसा उसकी दृष्टि ऊपर को उठ गई, और उसने हवाईनाव को देख लिया। तत्क्षण उसके मुंह से एक चीख निकली; उसके हाथ पैर कांपने लगे; पुल का रस्सा उससे छूट गया, और वह पानी में गिर पड़ी। केवल इतना ही नहीं उसके गिरते ही दल के दल मनुष्यभक्षक घड़ियाल आदि जल के जन्तु उसको खा जाने के लिये उसकी ओर बड़े वेग से झपटे।

चौथा प्रकरण।

जङ्गली औरत का जल में गिरना एक साधारण बात थी; और वह पैर कर नदी को सुगमता से पार कर सकती

थी, किन्तु घड़ियालों ने उसको चारों ओर से घेर लिया, और खा डालने का प्रयत्न करने लगे।

वार्ने—ओह! वह तो खा डाली जायगी!

जून। (साहसपूर्वक) उसको अवश्य बचाना चाहिए। वार्ने! रस्सी की सीढ़ी जल्द लटकाओ। पोम्प! तुम नाव को ठहरा दो।

वार्ने से और कुछ कहने का प्रयोजन नहीं था; उसने रस्सी की सीढ़ी तुरन्त लटका दी। जून बन्दूक निकाल लाया। वह औरत जलमग्न पथरीले चट्टानों पर भागती फिरती थी, किन्तु घड़ियाल उसका पीछा कहीं नहीं छोड़ते थे। जून ने बन्दूक दागी; फिर तोप की बाढ़ मारी। बहुत से घड़ियालों की लाशें नदी में तैरने लगीं। नदी का जल लालोलाल हो गया। इसी समय वार्ने जल्दी से बन्दर की तरह रस्सी की सीढ़ी से नीचे उतरकर भयभीत जंगली औरत के समीप हाथ बढ़ा कर बोला—

"यदि तुम जल्द चढ़ आओगी तो तुम्हारी जान बच जायगी।"

किन्तु वह औरत बहुत डरी हुई थी; उसने इस ओर ध्यान भी नहीं दिया; और यदि उसने पलटकर देखा भी तो वार्ने की बोली का एक शब्द भी न समझ सकी; लेकिन वार्ने ने उसको अपनी गठीली भुजा में दाब लिया,

और पोम्प को संकेत किया। उसी समय रस्सी की सीढ़ी पर लटके ही लटके वार्ने और उसकी बांह में दबी हुई जंगली औरत दोनों नदी के किनारे तक खींच लाये गए। यहाँ पर वार्ने अपने भारी बोझ को पटक कर आप भी भूमि पर गिर पड़ा; किन्तु जंगली औरत विनीतभाव से वार्ने के पैरों की ओर बढ़ी; वह अपनी जान के बचाने-वाले को देवता समझती थी। जून हवाईनाव पर से यह सब तमाशा देखता रहा।

अन्त सीढ़ी के द्वारा नीचे उतर आया; उस समय पोम्प ने नाव को नीची कर दिया था, लेकिन ज्योंही जून ने भूमि पर पैर रक्खा, २० या २२ हथियारबन्द असभ्य जंगलियों का दल वन के किसी भाग से निकल पड़ा. किन्तु हवाईनाव को देखतेही सब के सब पेट के बल भूमि पर लेट गए।

वार्ने। इन जंगलियों का बड़ा नम्र स्वभाव है। मालूम पड़ता है कि ये सब हमलोगों से जान पहचान करना चाहते हैं।

जून। (हँसते हुए) हां, ठीक है।

अन्त में जंगलियों का सरदार उठा, और साहस करके जून के समीप आया। उसके सिर के बाल श्वेत हो गए थे; उसकी कमर के साथ किसी जानवर की खाल का कमर-बन्द कसा हुआ था।

थोड़ी देर तक बुड्ढा (सरदार) चुपचाप खड़ा रहा, पश्चात् संकेतवार्त्ता करने लगा। उस समय जून को मालूम हुआ कि हमलोग बड़े ही भयङ्कर प्रदेश में हैं; पश्चात् उसने (जून ने) वार्नें से कहा—"अच्छा तो हमलोगों को यहां ठहरने की कोई आवश्यकता नहीं है; अब यहां से चलना ही उचित है।"

वार्नें, स्वामी की आज्ञानुसार हवाईनाव पर सवार होने के लिये मुड़ा ही था कि इतने में जंगल में से एक डरावनी आवाज आई, और एक आदमी दौड़ता हुआ आता दिखाई दिया। पहले हवाईनाववालों ने उसको जंगली असभ्य जाति का समझा, क्योंकि वह उन्हीं सभों की तरह कपड़े पहने हुए था, और उसका सारा शरीर काला था; किन्तु शीघ्रही मालूम हो गया कि वह जन्म का काला नहीं है, वरन अमेरिका का रहनेवाला गोरा आदमी है; गर्म देश में बहुत दिनों तक रहने के कारण उसका शरीर स्याह हो गया था। सिर के बाल उसके दोनों कन्धों पर बिखरे हुए थे, और छाती तक उसकी लम्बी तथा घनी दाढ़ी लटक रही थी; वह भयानक चीत्कार करता हुआ जून के समीप आया।

नवागन्तुक। आपलोग मेरे मुल्क के हैं; मैं नहीं कह सकता कि आपलोगों को देखकर कितना हर्षित हुआ।

जून। तुम कौन हो?

नवागन्तुक। मैं बहुत सी बातों को भूल गया हूं।

जून। तुम गोरी जाति के मनुष्य हो?

नवागन्तुक। हां, मैं न्यूयोर्क का रहनेवाला हूं। क्या आप अमेरिका के वाशिन्दे हैं?

जून। हां।

नवागन्तुक। मैं पहले ही समझ गया था। मेरा नाम जेसर ह्वाइट है; किसी समय में मैं अमेरिका के धनी लोगों में गिना जाता था।

जून। (आश्चर्य से) लेकिन यहां तुम क्या करते हो?

नवागन्तुक। (एक लम्बी साँस खींचकर) आह! वह एक बड़ी ही दर्दनाक कहानी है। मैं अपनी इच्छा से यहां नहीं रहता हूं।

नवागन्तुक। सुनिए, मैं अपना हाल आप से कहता हूं,— १८ वर्ष हुए कि मैंने अपनी सारी पूंजी ब्रिटिश-गायना (British Guiana) की एक खानि में लगा दी। मैं उसे देखने के लिये यहां आया; पर आह! मैंने अपनी हालत बिगड़ी हुई पाई।

जेसर ह्वाइट ने कहते कहते दोनों हाथों से अपना मुँह छिपा लिया, और रोने लगा; थोड़ी देर के बाद वह सम्हलकर पुनः बोला,—

जेसर। मुझको यह भी मालूम हो गया कि मेरी स्त्री

अब मेरी नहीं रही; वह उसी की हो रही जिसके कारण मैं बर्बाद हुआ था। कुछ दिनों तक मैं एक पागल की तरह इधर उधर भटकता रहा।

जून। निस्सन्देह, उस समय तुमको बहुत दुःख हुआ होगा।

जैसर। मैंने उन दोनों को नष्ट कर देने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की, और यदि मैं अमेरिका जा सकता तो उन दोनों को स्वयं मार डालता; लेकिन ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि मेरे पास रुपया नहीं था; अतएव मैं उस बात को भुला देने का प्रयत्न करने लगा। एक दिन जब मैं अपने साथियों सहित जंगल में फिर रहा था, उस समय इस असभ्य जंगली जाति के एक दल ने हमलोगों पर आक्रमण किया, और मेरे सिवाय सब मारे गए। इनके सरदार की लड़की ने कह सुनकर मेरी जान बचाई; मैं इनकी जाति में ले लिया गया; और सरदार की उसी लड़की के साथ जिसने मेरी जान बचाई थी, जंगली रीति भाँत के अनुसार मेरी शादी हुई। तब से मैं यहीं हूं; और यह पहला ही अवसर है कि मैंने इस जगह स्वदेश के मनुष्यों को देखा है, जिनके देखने की मुझे इस जन्म में बहुत कम आशा थी।

जून। (जो अभी तक ध्यान देकर सब बातें सुन रहा

था) मैं समझता हूं कि तुम अमेरिका जाने के लिये उत्सुक होगे ?

जस्पर। जी नहीं।

जैस्पर ह्वाइट के मुख पर शोक के चिन्ह अङ्कित हो गए, और उसका हृदय जो अब जंगली जाति के सहवास से यद्यपि बहुत कठोर हो गया था, जोर जोर से धड़कने लगा।

जून। मैं तुमको अमेरिका पहुंचा दे सकता हूं।

जैस्पर। महाशय ! मुझको अमेरिका जाने की इच्छा नहीं है।

जून। यह क्यों ?

जैस्पर। आपही सोचिए कि मैं अमेरिका जाकर क्या करूंगा। वहां मेरा धन नहीं है, मित्र नहीं हैं, कोई आत्मीय नहीं है। मेरी स्त्री वहां नहीं, मेरा मकान नहीं, मेरा कुछ भी नहीं, फिर वहां जाने से क्या लाभ ? मेरे मित्र मुझको भूल गए होंगे।

वह थोड़ी देर तक चुप रहा, पश्चात् पुनः बोला,—

जैस्पर। ऐसी अवस्था में आप सोच सकते हैं कि अमेरिका की अपेक्षा में यहां अधिक सुख से रह सकूंगा।

जून। (सिर हिलाकर) हां, तुम्हारा कहना ठीक है।

जैस्पर। मैं समझता हूं कि मैं बहुत ठीक कह रहा

हूं, क्योंकि मेरी जंगली स्त्री मुझको प्यार करती है; इससे बढ़कर और क्या चाहिए? हमलोग बाल बच्चों के साथ बहुत सुख से रहते हैं।

जैसर ह्वाइट ने आगे बढ़कर जून का हाथ पकड़ लिया और कहा—"मैं आपको बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं, किन्तु मेरे अमेरिका न जाने का कारण तो आप देखही रहे हैं!"

जून। हां, मैं जानता हूं, और समझता हूं कि तुम यहां बहुत सुख से रहोगे।

इसके अनन्तर जून ने जैसर-ह्वाइट को हवाईनाव दिखलाई। वह उसको देखकर आश्चर्यान्वित हुआ।

जैसर। मैं धुआंकश और इञ्जिन की अद्भुत कारीगरी का हाल जानता हूं; पर कभी स्वप्न में भी मैंने यह नहीं सोचा था कि हवा पर नाव चलते देखूंगा!

जून। खैर, तुम इस समय तो देख रहे हो; और यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं इस हवाईनाव पर चढ़ाकर तुमको अमेरिका पहुंचा दूं।

जैसर०। नहीं, मैं यहीं रहूंगा।

जंगली लोग अपने गोरे सरदार जैसर को वहां देखकर साहस करके हवाईनाव के समीप आए। वे हवाईनाव वालों से मित्रता करना चाहते थे; अतः उन सभों ने ना-

रियन आदि जंगली फल और एक शेर की खाल लाकर जून को भेट स्वरूप दिया। परिवर्त्तन में उनको लोहे की कुछ चीजें और पुराने कपड़े दिए गए, जिनको पाकर वे बहुत प्रसन्न हुए, और जब उनको यह मालूम हुआ कि हवाईनाववालों ने उनकी जाति की एक स्त्री की जान बचाई है तो वे मानो उनके चिरपरिचित मित्र से भी बढ़ गए।

जैस्पर। (जून से) एक छोटी सी बात में मैं आपकी सहायता चाहता हूं।

जून। किस बात में?

जैस्पर। एक बहुत बड़े चीते ने हमलोगों को गत एक वर्ष से बहुतही दुःखित कर रक्खा है; इस एक वर्ष के बीच में उसने अनुमान एक दर्जन मनुष्यों को खाया होगा।

जून। हां!

जैस्पर। जी हां; यदि आप उसको मारेंगे तो हमलोग यथाशक्य उसका बदला चुका देंगे।

जून। (प्रस्तुत होकर) मैं इस बात को सहर्ष स्वीकार करता हूं।

जेस्पर-ह्वाइट ने जून को धन्यवाद दिया। वार्नें और पोम्प यह सुनकर कि चीते का आखेट होगा बहुत ही प्रसन्न हुए। इसके उपरान्त जैस्परह्वाइट, जून और उसके साथियों को लेकर घने जंगल के बीच से होता हुआ गांव की ओर चला।

यहां पहुंचकर हवाईनाववालों ने बहुत ही सुहावना दृश्य देखा। वार्न और पोम्प विशेषतः प्रसन्न हुए।

पांचवाँ प्रकरण।

जंगलियों के गांव में पचास साठ बेढंगी झोपड़ियाँ थीं। ये झोपड़ियाँ नारियल की जाति के किसी वृक्ष की पत्तियों को गूंथकर बनाई गई थीं, और इनमें से पानी नहीं टपक सकता था।

जंगली औरतें अपने महमान हवाईनाववालों के प्रसन्नतार्थ इनके सन्मुख नृत्य गानादि के लिये आईं। ये स्त्रियां सुन्दर थीं; इनका शरीर सुडौल था; और इनका जंगली नृत्य बुरा नहीं था, प्रत्युत दर्शकों को हँसा हँसा कर प्रसन्न कर देनेवाला था। इसके अनन्तर इन लोगों ने जंगली भोज में योग दिया; जिसमें स्वादिष्ट जंगली फल, मदिरा और मांस आदिक एकत्र किए गए थे।

खान पान के समाप्त होने पर चीते के आखेट की बात छेड़ी गई। हवाईनाव गांव में लाई गई; सब प्रबन्ध कर दिया गया; और चीते के रहने का स्थान जून और उसके साथियों को दिखला दिया गया।

चीता एक बड़ी माँद में जंगल के बीच ग्राम से थोड़ी दूर पर रहता था। यह बात निश्चित हुई कि २० जंगली

सिपाही अस्त्र शस्त्र से सज्जित होकर, और अपने बचाव के लिये हाथ में जलती हुई बड़ी बड़ी मशालें लेकर जंगल में जायँ, और चीते के रहने की जगह के समीप जाकर जोर जोर से चिल्लायें। उनका कोलाहल सुनकर चीता अवश्य माँद से बाहर निकलेगा; उस समय जून हवाईनाव को धरती से १०० फीट ऊपर ठहराकर वहीं से अपने विचित्र शस्त्रों की सहायता से उसको मार डालें।

जब यह बात ते पाई तो जून और उसके दोनों साथी मय जेम्पर-ह्वाइट के हवाईनाव पर चढ़कर धरती से १०० फीट ऊपर ही ऊपर जंगल को जाने लगे। हवाईनाव की चाल को देखकर जेम्पर ह्वाइट जो अब तक मानो सुषुप्तावस्था में था, जाग उठा, और कई मिनटों तक इसी नववस्तु को आश्चर्यान्वित होकर तीव्र दृष्टि से देखता रहा।

हवाईनाव अब उस जङ्गल के ऊपर ठहरा दी गई जहां चीता रहता था। माँद के आसपास उसके पैरों के असंख्य चिन्ह पृथिवी पर पाए गए।

जंगली लोग बहुत डरे हुए थे। वे सब एक गोल घेरा बाँधकर विकट स्वर से चिल्लाने और पृथिवी पर पैर पटकने लगे; किन्तु जून ने चीते को माँद से बाहर निकालने का एक इससे भी उत्तम उपाय बहुत शीघ्र सोच लिया।

जून। (जैस्पर ह्वाइट से) क्या आपको विश्वास है कि चीता यहीं इसी जंगल में है ?

जैस्पर। हां; लेकिन यह आप क्या कर रहे हैं ?

जून। उसको बाहर बुलावेंगे।

जैस्पर। आप ठहरिए; मेरे आदमी उसे शीघ्रही माँद के बाहर निकालेंगे।

जून। इसमें कोई सन्देह नहीं, पर मैं उनसे भी जल्दी निकाल सकता हूं।

जैस्पर। बहुत अच्छा, मैं नहीं बोलूंगा; आपके जी में जो आवे वही कीजिए।

जून नाव की छत पर गया, और तोप पर बत्ती रखकर चीते के गड्ढे को लक्ष करके फ़ायर किया। एक भारी ठहाका हुआ, और मिट्टी, पत्थर, घास आदि एक बार झोंके के साथ धरती पर से आकाश की ओर उड़े।

ठहाके की आवाज़ अभी दूर दूर तक वन में गूंज ही रही थी कि चीते के गर्जन करने की डरावनी आवाज कुछ दूर पर सुनाई दी, और क्षण भर में एक बहुत बड़ा चीता पूंछ फटकारता हुआ माँद से बाहर निकला, और हवाई-नाव की ओर अपने उन नेत्रों को गड़ोकर देखने लगा जिनमें से डरावनी चमक निकल रही थी।

जून। ओह! यह तो बहुत बड़ा है।

जेस्पर। मैंने तो आप से पहले ही कहा था।

जून। हां, आपका कहना यथार्थ है।

जून चाहता तो हवाईनाव के ऊपर ही से गोली मार कर चीते का काम बिना परिश्रम समाप्त कर सकता था, किन्तु उसने एक दूसरी बात सोचकर जेस्पर की ओर देखा और कहा,—

जून। इधर देखो जेस्पर! तुम कहते थे न कि चीते ने तुम्हारे एक दर्जन मनुष्यों को खा डाला?

जेस्पर। हां।

जून! भला! यदि वह कुत्ते की तरह पाला जाय तो कैसा हो?

जेस्पर। (चकित होकर) आपके कहने का क्या तात्पर्य्य-है?

जून। यही, जो मैं कह रहा हूं।

जेस्पर। मैं आपकी बातें नहीं समझता हूं।

जून। कहो तो मैं उसे जीता ही पकड़ लूं।

जेस्पर। मैं समझता हूं कि आप मुझसे ठट्ठा करते हैं।

जून। ठट्ठा करता हूं! अच्छा देखो।

जून यन्त्रों की कोठरी में गया, और लोहे का एक लम्बा तार लेकर तुरन्त बाहर आया। यह तार लोहे के एक मोटे तथा गोल छड़ पर लपेटा हुआ था। जून उसको खोल खोल कर हवाईनाव के नीचे लटकाने लगा। वह

तार बराबर नीचे की ओर चला गया; यहां तक कि थोड़ी देर में पृथिवी से जा लगा; तब जून ने कहा,—

जून। पोम्प! पश्चिय के निकट जाओ।

आज्ञानुसार पोम्प ने कोठरी में प्रवेश किया, और बिजली की सहायता से नाव को हटाते हटाते वहां तक ले गया, जिस जगह वह तार चीते की पीठ पर पहुंच गया। इतने हलके तार के पीठ पर लगने से चीते को कुछ मालूम भी नहीं हुआ; और वह जहां का तहां खड़ा पूंछ हिलाता रहा।

जून। पोम्प! नाव ठहरा दो।

तब वह कोठरी में गया; और तार के एक सिरे को लोहे के दो टुकड़ों के बीच में दबा दिया; और एक यन्त्र घुमाकर वहां से हट आया। तार में बिजली की सनसनाहट हुई; और दूसरे सिरे तक जो चीते की पीठ पर लहरा रहा था (बिजली) पहुंच गई। तार में बिजली का असर होते ही चीता बड़े जोर से गर्जा; और एक क्षण में पृथिवी पर गिर पड़ा!

जून ने रेशम का बना हुआ दस्ताना हाथ में पहिन लिया। इस दस्ताने में यह गुण था कि जो व्यक्ति इसको पहिन कर बिजली के यन्त्रों को हाथ से पकड़े, उसके शरीर पर उसका असर कदापि नहीं हो सकता। दस्ताना पहिनने के अनन्तर जून ने तार को हाथ से पकड़

लिया; चीता निर्जीव की भाँति पड़ा था। जून ने तार का एक प्रबल झटका उसकी पीठ पर मारा; और पोम्प से कहा—"हवाईनाव को नीचे ले चलो।"

हवाईनाव नीचे उतारकर ठहराई गई। जून नाव पर से कूदकर चीते के समीप आया। जैसर ह्वाइट यह सब दृश्य आश्चर्यभरी दृष्टि से देख रहा था।

जैसर। मैं यह कुछ भी नहीं समझ सका! यह क्या बात है! कैसी अपूर्व शक्ति है!

जून। (अच्छी तरह से समझाकर) यह बिजली की शक्ति है जिसको मनुष्य ने हाथ से पकड़ना सीखा है।

जून ने चीते के दिल पर हाथ रक्खा; उसका (चीते का) हृदय बड़े वेग से धड़क रहा था। जून को मालूम हो गया कि वह मरा नहीं है, अत: वह बिजली का तार हाथ में लिये हुए था कि यदि प्रयोजन हो तो उसको व्यवहार में लावे। हवाईनाव पर से वह अपने साथ छोटे मोटे अनेक शस्त्र भी लेता आया था। इन औजारों में एक बड़ी कैंची और एक सँड़सा भी था।

अब वह झपट कर चीते के बड़े २ नाखून कैंची से काटने के लिये आगे बढ़ा। वह जानवर कुछ न कर सका, क्योंकि बिजली के विचित्र प्रभाव ने अभी तक उसका पीछा नहीं छोड़ा था।

थोड़ी देर में जून ने चीते के सब नाखून काट डाले; अब दाँतों को तोड़ने के लिये प्रस्तुत हुआ। यह कोई कठिन काम नहीं था, किन्तु सँड़से की सहायता से जून ने अभी करीब आधे दाँतों को तोड़ा होगा कि जानवर धीरे धीरे होश में आने लगा। जून ने तुरन्त बिजली के तार का एक झटका दिया; और पुनः वह जानवर वहीं का वहीं रह गया।

जून अपना काम बड़ी सावधानी एवं शीघ्रता से कर रहा था। थोड़ी देर में उसका काम समाप्त हुआ। सांघातक चीता नाखून और दन्तरहित हो गया। इसके अनन्तर जून ने जैसर से कहा—"लो, अब तुम इस मनुष्यभक्षक जन्तु को कुत्ते की तरह पाल सकते हो।"

जैसर। (धीमे स्वर में) वास्तव में मिश्टर रोड जून! मैंने आज से पहले न कभी ऐसी हालत देखी थी, न सुनी थी!

जून ने प्रसन्नमुख होकर उत्तर दिया—"ठीक है; यदि कोई व्यक्ति नूतन आविष्कार करे तो उसको जान कर विशेष हर्ष होता है।"

जैसर। मैंने कभी नहीं सुना था कि कहीं जीवित चीते के दाँत भी तोड़े गए हैं। अच्छा, हमलोग इस जानवर को आपके स्मरणार्थ गांव में ले जाकर पालेंगे।

जंगली लोग जो अब तक मौन साधे निश्चल खड़े यह सब काररवाई देख रहे थे, जून को देवता समझने लगे। वस्तुत: जो मनुष्य केवल एक तार की सहायता से इतने बड़े सांघातिक जानवर को वस में ला सकता है वह कोई साधारण मनुष्य नहीं कहा जा सकता है। जून और उसके दोनों नौकर हँसने लगे। चीता जब होश में आया तो उसने अपने दोनों अगले पैरों को मजबूत रस्से से बँधा पाया।

वह धीरे धीरे आगे बढ़ा, और जब अपने चारो ओर भीड़ देखी तो उछलने कूदने और गर्जने लगा। पश्चात् रस्से को तोड़ने का प्रयत्न करने लगा; किन्तु जंगली लोग उस को खींचते हुए गांव की ओर ले चले। हवाईनाव भी गांव में लाई गई।

जून ने उस गांव में एक दिन तक ठहरना निश्चित किया। उसी समय जंगली लोग अपने शक्तिशाली महमानों के सन्मानार्थ एक बड़े भोज की तय्यारी में प्रवृत्त हुए।

छठाँ प्रकरण।

जंगली लोगों के गांव का गांव उस रात बहुत प्रसन्न दीखता था। बाजे मधुर स्वरों में बजने लगे। नाचनेवाली खूबसूरत छोकरियाँ पुन: दिखाई पड़ीं; और पुन: जंगली पुरुष मनमोहन नाच नाचने लगे। हमारे हवाईनाववालों

को यह सब दृश्य मनोरञ्जक मालूम हुआ; पोम्प ने कहा कि—"मैं इनसे भी अच्छा तमाशा कर सकता हूं।"

और यह कहकर उसने वार्नें को उँगली के संकेत से समीप बुलाया; और दोनों नाव की कोठरी में चले गए। जब वे बाहर आए तो उनके हाथ में एक बांसुरी और एक बैञ्जो बाजा दिखाई दिया। वार्नें बाँसुरी अच्छी बजाता था और पोम्प बैञ्जो बजाने में निपुण था।

पोम्प सबके बीच में आकर नाचने लगा। जंगली लोग तुरन्त अपने बेताल राग को बन्द करके पोम्प और वार्नें का खेल एकाग्रचित्त होकर देखने लगे। पोम्प बैञ्जो को दुरुस्त करके उसको बजाता जाता था, और नाच नाचकर अपनी बोली में मनहरण गान गाता जाता था। जंगली लोग "वाह वाह" की धारा प्रवाहित कर रहे थे। वार्नें ने बाँसुरी पर स्वदेशी बोली में दो चार उत्तम गीत गाकर सबके मन को मोह लिया।

अभी सूर्य्य भगवान के दर्शन होने में कुछ देर थी। जैस्पर व्हाइट ने कहा—"आप जब चाहें तब यहां आ सकते हैं। हमलोग आपको कभी नहीं भूलेंगे।"

जून। मैं आपकी इस प्रीति से बहुत सन्तुष्ट हुआ।

जैस्पर। क्या आप मनबहलाव के लिये यात्रा कर रहे हैं?

जून। इस बात का उत्तर देने के पूर्व में आप से यह

पूछता हूं कि आपने कभी हीरों की घाटी का नाम भी सुना है ?

जेस्पर। हां हां, अवश्य सुना है।

जून। वह किस ओर और कहां है ?

जेस्पर। बहुत नीचे, ब्रेज़िल में; रायोनिगरो के समीप। मैं समझता हूं कि मज़ूटानगढ़ में है।

जून। वहां पहुंचना क्या कुछ कठिन है ?

जेस्पर। इसमें क्या सन्देह है। मार्ग में बड़े २ विघ्न हैं। मज़ूटानगढ़ के निवासी भयानक लड़ाके होते हैं। इसके सिवाय सर्पों की घाटी को पार करना होगा, जहां विषैले सर्प निश्चय आक्रमण करेंगे।

जून। तो आप समझते हैं कि हमलोगों को वहां पहुंचने में कठिनाई पड़ेगी ?

जेस्पर। (कुछ सोचकर) ओह ! मैं भूल गया था। हवाईनाव हर जगह जा सकती है।

जून। क्या यह बात सत्य है कि वहां हीरे पाए जाते हैं?

जेस्पर। जी हां, बहुत सच है। वहां नदी की रेत में हीरे दबे हुए मिलते हैं।

जून। मैं आपको अनेक धन्यवाद देता हूं कि आपके द्वारा मुझको इतना पता मिल गया।

थोड़ी देर के बाद जेस्पर-ह्वाइट की गांव से हवाईनाव-

वाले विदा हुए; और नाव को सीधे दक्षिण दिशा को ले चले। अब यह लोग जिस देश को पार कर रहे थे वह बहुत ही मनोहर था। मनोज्ञ और अनेक प्रकार के विशाला-कार वृक्षों के घने जंगल; गहरी तराइयाँ; और दूर दूर तक फैले हुए सपाट मैदान दिखाई दिए। बड़े वेग से बहती हुई चौड़ी नदियां जिनके दोनों तटों पर छोटे छोटे कोमल पौधे लगे हुए थे पीछे छूटीं। वन, अनेक रंग के जंगली पशुओं से भरे हुए दृष्टिगोचर हुए। कहीं ऊँचे ऊँचे वृक्षों पर चंचल बन्दर किलकारियां मारते और कूद रहे थे, और कहीं सुन्दर चिड़ियां फुदक फुदक कर चुहचुहा रही थीं। वार्नें और पोम्प' निश्चिन्तभाव से इन छटाओं को देखते चले जाते थे, और कभी हवा में उड़ते हुए पक्षियों को गोली और छर्रें का लक्ष्य भी बनाते थे कि इतने में कुछ जंगली हरिन एक हरे भरे मैदान में चुपचाप घास चरते दिखाई दिए। वार्नें ने उनमें से एक को पकड़ना चाहा, अतः उसने एक पर गोली चलाई। गोली जाकर उसकी गर्दन पर लगी, और वह एक बार उछला, पश्चात् गिर-कर मर गया।

वार्नें। हिः हिः हिः हिः! कैसा ठीक निशाना बैठा। पोम्प! तुम उस मृत हरिन की ओर देख रहे हो? अब मैं उसके सींग लाऊंगा।

पोम्प की आंखें चमक उठीं। बार्ने हवाईनाव को नीचे उतारने के लिये यन्त्रों की कोठरी की ओर बढ़ा, ताकि वह हरिन के सींगों को काटकर ले सके। इस समय जून कोठरी में सोए थे। बार्ने को इस छोटी सी दिल्लगी का अच्छा मौका मिल गया। हवाईनाव नीचे उतारकर उस जगह ठहराई गई जहां हरिन मरा पड़ा था, और उसकी सब साथी चौकड़ी भर भर कर भाग गए थे।

बार्ने तुरन्त नाव का जंगला पार करके हाथ में शिकारी छुरा लिये हुए हरिन का सींग निकालने के लिये उसके समीप पहुंचा; उसको सींगों के काटने में दो तीन मिनट लगे। इस बीच में पोम्प चुपचाप हाथ पर हाथ रखे बैठा नहीं था। बार्ने के जातेही वह कोठरी में दौड़ कर गया, और एक तार ले आया; इसको उसने जंगले से बांध कर बिजली के साथ मिला दिया। इस प्रकार बिजली का असर जंगले भर में फैल गया; किन्तु पोम्प ने बिजली में पूरी ताकत नहीं भरी थी। जब बार्ने अपना काम समाप्त करके नाव की ओर लौट रहा था, उसने अपने कार्य्य की सफलता की खुशी में सींगों को पोम्प को दिखाते हुए कहा—"देखो यह कैसे सुन्दर हैं।"

पोम्प। इनको तुम क्या करोगे?

बार्ने। लौटने पर इनको अपने घर के द्वार पर लगाकर उसकी शोभा बढ़ाऊंगा।

अब वार्नें जंगले के समीप पहुंच गया, और उछल कर उसको पार करना चाहा, किन्तु इसका फल बहुत बुरा हुआ;—बिजली जो जंगले में फैल गई थी उसके शरीर में सनसनाई, और वह चक्कर खाकर औंधे मुंह भूमि पर गिर पड़ा! किन्तु बिजली का असर कम होने के कारण वह तुरन्त उठ बैठा, और पोम्प को मुस्कराता और टहलता पाया।

वार्नें। तुमने मेरे साथ ऐसा वर्त्ताव क्यों किया?

पोम्प। क्या तुम पागल हो गए हो?

वार्नें। अच्छा ठहरो. मैं अभी बतलाता हूं कि पागल हो गया हूं कि होश में हूं।

यह कहकर वह बिना जंगले का सहारा लिये कूदकर नाव पर आया. और अपने कातिल छुरे से पोम्प को घायल करही देनेवाला था कि इतने में जून की आँख खुल गई, और वह आंखें मलते हुए जंगले के पास आकर क्रोध के आवेग से चिल्ला कर बोले,—

जून। तुम लोग क्या कर रहे हो?

वार्नें और पोम्प दोनों में से एक के मुंह से भी बोली नहीं निकली। पोम्प ने बिल्ली की तरह दबका कर जंगले से तार को अलग कर दिया, और वार्नें ने हरिन के सींग दिखलाए। जून ने समझाकर कहा कि—"फिर कभी बिना मेरे हुक्म के कोई काम मत करना। ऐसे कामों में बहुत डर रहता है।"

पोम्प ने अपने स्वामी की बात को स्वीकार किया। इसके अनन्तर हवाईनाव उड़ाई गई। ज्यों ज्यों दिन बीतते जाते थे त्यों ही त्यों जून समझता था कि हमलोग जवाहरात की घाटी के समीप पहुंचते जाते हैं। एक दिन दूरबीन से जून ने बहुत दूर पर ऊंची ऊंची पहाड़ियों का सिलसिला देखा, और जल्दी से कहा—"यदि मैं भूलता नहीं हूं, तो कह सकता हूं कि सामने सर्पों की घाटी है; और उसके बाद हीरों की घाटी है।"

वार्नें और पोम्प बरन तीनों वहां (हीरों की घाटी में) पहुंचने के लिये बड़े उत्सुक थे। हवाईनाव की चाल बढ़ा दी गई। बहुत जल्द ये लोग ऊँचे ऊंचे पहाड़ों के बीच की एक सकरी घाटी से होकर चौड़ी जगह में पहुंचे। हवाईनाव अब तक बड़ी तेजी के साथ चली जाती थी। वार्नें यन्त्रोंवाली कोठरी में गया था, और जब वह बाहर आया तो बोला,—

वार्नें। घड़ों * में अब जल नहीं है। उनको भर देना चाहिए।

जून। हां हां, बहुत शीघ्र भरना चाहिए।

उसी समय पोम्प घबराकर चिल्लाया "अरे यह क्या!"

* वे घड़े जिनके द्वारा हवाईनाव हवा में उड़ती है। घड़ों में जल न रहने से नाव नहीं उड़ सकती।

सातवाँ प्रकरण ।

पोम्प बड़े आश्चर्य और दुःख से चिल्लाया था, किन्तु उसको अपने चिल्लाने का कारण स्वयं नहीं बताना पड़ा, क्योंकि जून और बार्न ने भी तुरन्त मालूम कर लिया कि हवाईनाव में अब वह तेजी नहीं है जो थोड़ी देर पहले थी, किन्तु वह शनैः शनैः भूमि की ओर गिर रही है; और यही देखकर पोम्प चिल्लाया था।

जून। हमलोग गिर रहे हैं! क्या सबब है?

यह कहकर वह तुरन्त यन्त्रों की कोठरी में दौड़ गया। यन्त्र इस समय अपना काम नहीं कर रहे थे, अर्थात् बिलकुल बन्द पड़े थे। उस समय जून बहुतही शोकार्त्त होकर सोचने लगा—"पहियें कैसे बन्द हो गई?" तब उसको स्मरण आया कि घड़ों में जल नहीं है; और यही कारण है कि यन्त्र बन्द हो गए हैं, और नाव भूमि पर उतर रही है; किन्तु इससे कोई हानि की सम्भावना नहीं थी, क्योंकि हवाईनाव बहुत धीरे से भूमि के साथ जा लगेगी; और ऐसा ही हुआ भी। थोड़ी देर में हवाईनाव घने वृक्षों के कुञ्ज के एक छोर पर खुले मैदान में धीरे से भूमि पर ठहर गई।

उस समय जून का चित्त समीप ही एक जलाशय को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ; और वह अपने साथियों से कहने लगा—"खुशी की बात है कि मौके पर घड़ों में भरने योग्य स्वच्छ जल भी पास ही है।"

पोम्प। निःसन्देह हर्ष का विषय है; और देखिए भाग्यवश जलाशय भी नाव से डेढ़ दो सौ कदम से अधिक दूरी पर नहीं है।

जून। हां, लेकिन आओ, हमलोग जल्दी करें; अभी बहुत कुछ करना शेष है।

दोनों आज्ञाकारी नौकरों से और कुछ कहना नहीं पड़ा। एक चमड़े की नली जिसका एक ऐसे यन्त्र के साथ सम्बन्ध था, जिसके घुमाने से पानी आप से आप नली में से हो कर जहां जी चाहे तहां लाया जा सकता था, हवाईनाव से जलाशय तक लाई गई; किन्तु पानी खींचे जाने के पहले ही एक भयानक घटना सङ्घटित हुई!

वार्नें नली का एक सिरा पकड़े जलाशय के किनारे खड़ा था। पोम्प, हवाईनाव और जलाशय की दूरी के बीच में खड़ा था। वार्नें ने नली के सिरे को झुक कर जल में डुबोया, और पुनः सिर उठाया ही था कि उसका पैर काष्ठ की एक गोलाकार मोटी धरन के ऊपर पड़ा, किन्तु उसके पैर का उस पर पड़ना था कि वह वस्तु (धरन) हिली, और बटुरकर जल्दी से घेरा बाँधकर बैठ गई!

उस समय वार्नें डर और घबराहट के कारण जोर से चिल्लाया—"अरे! यह तो अजदहा है! मैं मरा, मैं मरा! बचाओ, बचाओ!"

वार्नें उछलकर भागने हो को था कि इतने में अजदहे ने दौड़कर उसको अपने शरीर से लपेट लिया।

वार्नें को जान पड़ा कि उसकी हड्डियां टूट रही हैं; और उसने एक ही क्षण में अजदहे के भयंकर मुंह को अपनी ओर बढ़ते देखा। बिचारा निराश और भयभीत हो कर चिल्ला उठा। पोम्प इस दृश्य को देखकर बहुत डर गया था, इस कारण अपने साथी की सहायता न कर सका; किन्तु जून ने उस ओर ध्यान दिया, और तुरन्त पुकार कर कहा,—"वार्नें! तुम अपना शरीर मत हिलाओ डुलाओ; बिलकुल मृतक की भांति बना लो, और चुप रहो। मैं अभी तुमको बचाने का उपाय करता हूं।"

वार्नें ने जून की बात सुनी, और डरकर कहा,—"मुझे बचाइए,……ओफ! ओफ! अब मैं नहीं बच सकता; मेरी हड्डियां टूटी जाती हैं।"

जून ने हवाईनाव के जंगले पर झुक के कहा—"हिम्मत मत हारो" और तत्काल अजदहे को लक्ष्य करके फ़ायर किया।

गोली अजदहे के सिर में धँस गई; और वह वार्नें को छोड़कर फटफटाने लगा। वार्नें छूटते ही कूद कर हवाईनाव पर आया। यद्यपि अजदहे का सिर फटकर पृथक् हो गया था, किन्तु वेसिर का अजदहा लुढ़कता पुढ़कता

चक्कर खाता हुआ घासों से छिपे हुए एक गहरे गड्ढे में चला गया, और बड़े बड़े तीन अजदहे उसमें से तुरन्त निकल आए!

जून। हे भगवान! मैंने कभी इतने बड़े अजदहे नहीं देखे थे!

वार्नें हवाईनाव पर चला आया था; पोम्प बन्दूक भर कर एक अजदहे को मारने का इरादा कर रहा था; इतने में जून ने कहा—"हमलोग सचमुच सर्पों की घाटी में हैं! क्या पहले भी कभी इतने बड़े अजदहे देखे थे?"

वार्नें। ठहरिए, मैं अभी एक को यमलोक का रास्ता दिखाता हूं।

इसके उपरान्त गोली छूटी, किन्तु अजदहे के सिर में न लगकर धड़ में लगी, और कई अंगुल तक छेद दिया। वह बड़ा अजदहा क्रोध में भरा हुआ हवाईनाव पर आक्रमण करने के लिये झपट पड़ा! वह बहुत ही बलिष्ट था, और उसका शरीर विशाल था। जून और उसके साथियों ने दौड़कर हवाईनाव की कोठरी में घुसकर भीतर से द्वार बन्द कर लिया। जून ने छिद्र में से गोली चलाई, पर अजदहा तूफान की तरह टूटा आता था, वह गोली की चोट खाकर नहीं रुका!

उसने अपने शरीर को एक बार तौलकर हवाईनाव

के जँगले से टक्कर मारा, जिससे नाव के बन्द बन्द हिल गए, और जून वगैरह झटका खाकर तख्ते पर गिर पड़े; किन्तु जून उठा, और उसने छिद्र में से दूसरी गोली चलाई। इस बार अच्छा फल हुआ, क्योंकि गोली लगते ही अजदहा गिर कर ठण्डा पड़ गया।

अभी जून ने एक को मार कर साँस भी नहीं ली थी कि उसने देखा कि गड्ढों, वृक्षों के पीछे और जंगल में से बड़े बड़े १०। १२ अजदहे चले आ रहे हैं! जून ने सोचा कि इन सबों ने गोली की आवाज सुनी है, और उसी के लक्ष्य पर चले आ रहे हैं।

जून। अब इसमें कोई सन्देह नहीं रहा कि हमलोग सर्पों की घाटी में हैं।

सचमुच जेसर-ब्राइट ने जो विभीषिकामयी कहानी सुनाई थी वह सत्य थी। अब हमारे यात्रीलोग बहुत बुरी जगह आ फंसे हैं; और घड़ों में बिना जल भरे इस स्थान को छोड़ना नितान्त ही असम्भव है।

जल भरने के लिये किसी को साहस करके कोठरी के बाहर निकलने की बड़ी ही आवश्यकता थी; किन्तु यह बहुत ही कठिन काम था, तौभी कोई न कोई उपाय अवश्य और बहुत शीघ्र करना चाहिए।

दिन ढल चुका था, और सायंकाल की धुंधली धुंधली

अँधियारी पूर्व्व दिशा से क्रमशः उमड़ घुमड़ कर समस्त संसार में फैलती जाती थी। हमारा युवा आविष्कर्त्ता (जून) खड़ा व्यर्थ समय नष्ट कर रहा था। भयंकर अजदहों ने हवाईनाव को चारों ओर से घेर लिया, और फुफकारियाँ मारने लगे। जान पड़ता था कि वे इन तीनों के अनुसन्धान में थे।

जून ने आप ही आप कहा—"आह! साहस ने हम-लोगों का साथ एकबार ही छोड़ दिया!" पुनः वार्नें से बोला—"वार्नें! तुमने नली को जल में डुबोया था और शायद वह अभी तक उसी में होगी?"

वार्नें। हां, नली का एक सिरा अभी तक जल में पड़ा है।

जून। (हर्षित होकर) तब घड़ों में जल भर लिया जा सकता है।

यह कहकर जून ने साहसपूर्वक निस्तब्धता से कोठरी का द्वार खोला, और उसी तरह चुपचाप बाहर आकर पानी खींचनेवाले यन्त्र को घुमाने लगा।

शनैः शनैः घड़ों में जल भरता जाता था, किन्तु अभी तक इतना नहीं भरा गया था कि हवाईनाव को उड़ाने-वाले यन्त्र चल सकते कि इतने में अजदहों ने जून को देख लिया, और तत्क्षण इसकी ओर झपट पड़े! विवश होकर जून को जल्दी से कोठरी में लौट आना पड़ा। अब क्या

किया जाय ? जून ने मन में सोचा कि इन अजदहों को गोली से मारना असम्भव है, क्योंकि गोली की आवाज सुनकर और भी अजदहे समीपस्थ वन और पर्वतों में से निकल आवेंगे।

यदि भेड़ियों का झुण्ड होता, अथवा शेर होते तो उनको डरा कर भगा देने में बहुत कम समय लगता, किन्तु अजदहे तो जानते ही नहीं थे कि "भय" किस वस्तु का नाम है! वे दल के दल हवाईनाव के इर्द गिर्द विचर रहे थे, वरन उनमें से कई एक जँगला पार करके हवाईनाव के तख़्ते पर भी चले आए थे उनके शरीर के बोझ से हवाईनाव के तख़्ते कड़कड़ा कड़कड़ाकर टूटने लगे!

वार्नें। (जून से) महाशय! अब आप बिजली के यन्त्रों को काम में लाकर इनको मार सकते हैं।

जून। नहीं, अभी मौका नहीं है।

वार्नें। खैर, हमलोगों को उद्योग तो अवश्य करना चाहिए।

जून। अच्छा, यह भी सही।

किन्तु अभी ये लोग यन्त्रों की ओर बढ़े ही थे कि पोम्प उछल उछल कर चिल्लाने लगा!

पोम्प। यहां आकर देखिए; ऐसी दिल्लगी कभी न देखी होगी।

जून ने विलम्ब करना उचित नहीं जाना, और तुरन्त उस छिद्र के पास पहुंच गया जहां पोम्प पहले से खड़ा था। जून ने छिद्र में से दूर तक का दृश्य देखा, किन्तु ओफ! उसको एक ऐसी वस्तु दीख पड़ी, जैसी उसने आज से पूर्व कभी कहीं नहीं देखी थी!

आठवाँ प्रकरण।

छिद्र में से देखने पर जून को जान पड़ा कि विचित्र प्रकार की तेज आवाजों से समस्त वन गूंज उठा है; और बड़े बड़े अजदहे जो हवाईनाव पर उमड़े आते थे बहुत घबरा गए हैं! वे अजदहे जो हवाईनाव पर चढ़ आए थे, एक एक करके उतरने लगे; और जून यह देखकर और भी विस्मित हुआ कि उनमें से कईएक भाग भाग कर घनी झाड़ियों और ऊंचे २ पेड़ों पर छिप गए! किन्तु थोड़ीही देर में इस आचाञ्चक हलचल का कारण भी विदित हो गया।

एक बहुत बड़ा झुण्ड अद्भुत प्रकार के छोटे छोटे जन्तुओं का सामने से आता दिखाई दिया। इनकी सूरत बनैले सूअरों से बहुत मिलती जुलती थी, किन्तु ये गिलहरियों की तरह पृथिवी पर दौड़ते चलते थे। जून ने इनको देखकर तुरन्त पहिचान लिया कि ये "पिकारी" हैं।

ये छोटे जानवर बड़े भयंकर होते हैं। जब पिकारियों का झुण्ड दौड़ता है और कोई मनुष्य अथवा जानवर उनके रास्ते में पड़ जाता है, तो वह अवश्य मारा जाता है।

"पिकारी" जंगली सूअर की जाति का जानवर है, और यह बात प्रसिद्ध है कि यह जन्तु सर्पों का चिरशत्रु है। वे बड़े बड़े अजदहे जो हवाईनाव को घेरे हुए थे, पिकारियों को नहीं डरा सकते थे! यह भी कभी नहीं सुनने में आया कि किसी अजदहे ने किसी पिकारी को अपने लपेट में दबा कर मार डाला है। ये छोटे जानवर बड़े तेज होते हैं। इनके दाँत कातिल छुरे की तरह होते हैं; और ये क्षण भर में बड़े से बड़े अजदहों को टुकड़े २ करके रख दे सकते हैं।

जून इन बातों को भली प्रकार जानता था; अतः जब उसने पिकारियों को आते देखा तो उसको निश्चय हो गया कि इनके डर से अजदहे भाग जाँयगे; और जब ये सब भी यहां से चले जायँगे तो इस बन्द कोठरी में से निकलने का अवसर प्राप्त होगा।

पिकारियों का दल अब जलाशय के समीप पहुंच गया था। उनकी संख्या एक सहस्र से भी अधिक थी। उनके आगे कोई चीज़ नहीं ठहर सकती थी। उन बड़े बड़े अजदहों में से जो पिकारियों को देखकर भागने लगे थे यदि

कोई उनके (पिकारियों के) आगे पड़ गया तो तुरन्त मारा गया।

दो ही मिनट के बीच में सब अजदहे अन्तर्ध्यान हो गए। अपने तेज दाँतों से पिकारियों ने कई अजदहों को क्षण मात्र में खण्ड खण्ड कर डाला। इसके अनन्तर पिकारा भी जंगल में घुस गए। एक ही मिनट के बाद उनमें का एक भी नहीं दिखाई पड़ता था; और उनके डर से भागे हुए अजदहों का भी कहीं पता न लगता था। आज की विचित्र बातें जून और उसके साथियों को कभी नहीं भूलीं।

जब सब तरफ सन्नाटा हो गया तो वार्नें ने कहा—"क्या पहले भी कभी ऐसे जन्तु देखे थे?"

जून। नहीं, किन्तु हमलोगों को चाहिए कि बहुत शीघ्र इस वाहियात जगह को छोड़ दें।

पोम्प। मेरी भी यही इच्छा है।

पोम्प नाव के तख्ते पर चला गया, और नली के द्वारा जल भरने लगा; वार्नें भी उसको सहायता करने लगा। थोड़ी देर में सब घड़े भर गए। बिजली के यन्त्र पूर्ववत् चलने लगे। जून ने व्यर्थ समय का नष्ट करना अच्छा नहीं जाना; सर्पों की घाटी से उसका चित्त एकबार ही घबरा गया था।

जून। अब इसके बाद हीरों की घाटी है; वहां पहुंचना चाहिए।

हवाईनाव वायु में ऊँची हुई। अब ये लोग सर्पों की घाटी में से चले जा रहे थे। बहुत शीघ्र हवाईनाव उस भयङ्कर घाटी के मुहाने से होकर आगे चली। यह घाटी बड़े बड़े पथरीले चट्टानों की ऊँची दीवारों से घिरी हुई थी।

अब हवाईनाव हीरों की घाटी में उड़ी चली जाती थी। अन्त में ये लोग (हवाईनाववाले) उस स्थान पर पहुंच गए जहां इनको पहुंचना था।

घाटी के मध्य भाग में एक गहरी नदी कल कल शब्द करती हुई ऊँची नीची बड़ी छोटी पथरीली चट्टानों पर प्रवाहित थी। इसके सिवाय अन्यान्य लक्षणों से जून ने पहचान लिया कि यही हीरों की घाटी है। अब जून और उसके दोनों साथी निकटस्थ पर्वतों पर उगे हुए हरे भरे वृक्षों को आंख फाड़ फाड़ कर देखने लगे।

जून ने कहा—"मैंने पहले ही अनुमान किया था कि हीरों की खानि ऐसी ही जगहों में हुआ करती है।"

वार्ने। यहां तो चारों ओर की पृथिवी जंगल से ढँकी हुई है।

जून। हां, किन्तु ऐसेही स्थानों में हीरे पाए जाते हैं। देखो किम्बर्ली की खानि भी ऐसे ही निर्जन और भयानक स्थान में है।

वार्न फिर कुछ नहीं बोला। जून ने एक सुरचित जगह देखकर वहीं उतरना निश्चय किया। ५। ७ मिनट में हवाईनाव धीरे से पृथिवी पर आ लगी। यह जगह नदी से थोड़े ही अन्तर पर थी।

जून अपने हाथ में एक नोकीली कुल्हाड़ी और एक हल्का फावड़ा लिये कोठरी के बाहर आया, और कहा कि "अब काम शुरू करना चाहिए। आओ वार्न और पोम्प! हमलोग देखें कि यहां हीरा पाए जाने के बारे में हमलोगों से कितना सच और कितना झूठ कहा गया है।"

दोनों आज्ञाकारी नौकर जंगला पार करके जून के साथ भूमि पर आए। कार्य्य आरम्भ करने से पहले जून ने कहा कि—"यदि बिजली का जोर नाव के जंगले भर में फैला दिया जाय तो किसी बात का डर न रहेगा।" जून के कहते ही यह काम भी तत्काल समाप्त हुआ।

अब वे लोग नाव की ओर से निश्चिन्त हो गए। यदि कोई जानवर अथवा अन्य जीव नाव पर जाने का साहस करेगा तो उसका उचित फल भोगेगा।

हमारे तीनों यात्रियों को इस समय भूमि खोद कर हीरा निकालने की जल्दी पड़ी थी। २। ३ मिनट में ये लोग नदी के किनारे पहुंच गए। जून ने जल के समीप जा कर मुट्ठी भर वहां की मिट्टी उठाई, और कुछ देर तक उसे

देखता रहा; अन्त में उसे निश्चय हो गया कि यहां की भूमि खोदने से हीरे अवश्य निकलेंगे, अतः कार्य्य आरम्भ हुआ।

प्रत्येक कंकड़ की भली प्रकार जाँच होती थी। सहसा जून ने एक कंकड़ उठा लिया। यह भी पत्थर के अन्य छोटे छोटे टुकड़ों के समान था। जून ने इसे कुल्हाड़ी के लोहे पर ठोंका; ऊपर की मिट्टी उतर गई। वह एक बहुमूल्य हीरा था, जिसमें से खूब चमक निकल रही थी, किन्तु उसका दाम जाँचना इन लोगों का काम नहीं था; उसके मूल्य का अन्दाजा वही व्यक्ति कर सकता था जो जवाहिरात का काम करता हो। अस्तु, पोम्प ने कहा—"आपही का भाग्य पहले उदय हुआ; अब हमारी बारी है।"

वार्न। (पोम्प से) परिश्रम से भूमि खोदोगे तब मिलेगा, क्या हीरा मिलना कोई हँसी ठट्ठा है!

इसके अनन्तर तीनों बड़े परिश्रम से भूमि खोदने लगे। आधा घण्टा व्यतीत हुआ किन्तु फिर एक भी हीरा नहीं मिला। जून ने सोचा कि इस को छोड़कर दूसरी जगह की जमीन खोदनी चाहिए। यह सोचकर ज्योंही उसने हवाईनाव की ओर दृष्टि उठाई, उसने एक विचित्र सूरत देखी। अर्थात् हवाईनाव के पास एक ऐसी मूरत खड़ी थी जिसका शरीर मनुष्य की तरह था, किन्तु बहुत बड़ा और बालों से छिपा हुआ था। उसकी लम्बी लम्बी बाहें उसकी

घुटनों तक पहुंचती थीं, और उसके दाहिने हाथ में एक भारी लाठी थी।

जून। यह गुरिल्ला * है।

बार्नें। जी हां, यह गुरिल्ला ही है।

पॉम्प। (आश्चर्य से) मैंने अपने होश भर में कभी ऐसा पशु नहीं देखा।

जून सोचने लगा कि किसी प्रकार हवाईनाव तक पहुंचना चाहिए, क्योंकि यदि गुरिल्ले का सामना करना होगा तो बड़ी कठिनाई पड़ेगी। बार्नें ने अपनी बन्दूक उठाकर कहा,—"देखो मैं अभी इस गुरिल्ले का चेहरा विविगाड़े देता हूं।" किन्तु जून ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा कि—"ऐसा काम मत करो।"

बार्नें। क्यों?

जून। गोली मारने से कुछ काम नहीं चलेगा। इस जानवर का चमड़ा इतना कड़ा है कि इतनी दूर से गोली नहीं असर कर सकती।

बार्नें। नहीं साहब! क्या इतना कड़ा होगा कि गोली भी उसको न छेद सकेगी?

जून। हां, ऐसाही है।

---

* गुरिल्ला एक प्रकार का भयानक और विचित्र बन्दर होता है। इसके हाथ पैर मनुष्य की तरह होते हैं; और यह पाँव पाँव चलता है।

बार्नें ने विवश होकर उदासभाव से बन्दूक को रख दिया, और पूछा—"तो अब हमलोगों को क्या करना चाहिए?"

जून। थोड़ी देर तक चुप रहो। हमलोगों की भलाई इसी में है कि इस जानवर से दूर रहें।

बार्नें चुप हो गया। पोम्प की तीव्र दृष्टि बराबर गुरिल्ले की ओर गड़ी हुई थी। वह जानवर हवाईनाव को आश्चर्यदृष्टि से देख रहा था। वास्तव में सभ्य देश के मनुष्यों की कारीगरी विचित्र हुआ करती है। गुरिल्ला थोड़ी देर तक अपनी लाठी पर झुका हुआ कुछ सोचता रहा; पश्चात् उसने भयानक चीत्कार किया और अपने भारी लट्ठ को तान कर हवाईनाव की ओर झपटा, तथा ऐसे जोर से नाव के जंगले पर लाठी मारी कि उसका पेंदा तक हिल गया!

बार्नें। देखिए कैसा मोटा ताजा जानवर है! मैं अनुमान करता हूं कि इसके शरीर में एक बैल के बराबर ताकत होगी।

जून। बैल के बराबर! भाई, यहां के गुरिल्ले हाथी को भी गिरा दे सकते हैं; ये शेर के मुकाबिले में भी विजय प्राप्त करते हैं।

गुरिल्ले ने पहले तो लाठी मारी (जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है) इसके बाद जँगला पकड़ने के लिये

ख़ुद आगे बढ़ा। जून मुस्कराया, और अनुमान किया कि यदि यह नाव का जंगला हाथ से पकड़ेगा तो अच्छी दिल्लगी होगी! बलिष्ट से बलिष्ट पुरुष भी बिजली का जोर नहीं सहन कर सकता।

जून चुपचाप देखता रहा। इतने में जानवर ने दौड़ कर हवाईनाव के जंगले को पकड़ लिया। तत्काल एक आश्चर्यदायक फल दीख पड़ा!

यह पहला ही अवसर था कि गुरिल्ले ने अपने निर्जीव प्रतिद्वन्द्वी को अपने से बलिष्ट पाया। वह कुत्ते के एक छोटे बच्चे की तरह झोंका खाकर भूमि पर गिर पड़ा, लेकिन तुरन्त उठकर दाँत कटकटाने लगा। यदि उसने जून अथवा उसके साथियों को उस समय देख पाया होता, तो उसका फल बहुत ही बुरा होता।

उसको दाँत पीसते देख कर ये लोग जोर से हँस पड़े गुरिल्ले ने हँसने की आवाज सुनी और पीछे मुड़ कर देखा। नदी उस जगह से कुछ निचाई पर थी और वार्नें अपने साथियों में सब से लम्बा था, अतः उसको वार्नें ही का सिर दीख पड़ा, सुतरां वह कुपित हो गर्जन करता हुआ उसी की ओर दौड़ा!

नवाँ प्रकरण ।

बार्नै । देखिए देखिए, जानवर हमलोगों के पीछे पड़ा है । अब हम अवश्य मार डाले जायँगे !

गुरिल्ला बड़े वेग से झपटा चला आता था । बार्नै बहुत डर गया । पीम्प और वह दोनों भयभीत हो जून के पीछे बिल्ली की तरह दबक गए, किन्तु हमारा युवा आविष्कर्त्ता किञ्चित भी विचलित नहीं हुआ । उसने जल्दी से बन्दूक को फ़ायर करने के लिये ठीक किया, और कुपित हो दोनों से कहने लगा—"बेवकूफी छोड़ो । पुरुषत्व से काम लो, और ज्यों ही हम कहें फ़ायर करो ।"

दोनों ने जून की आज्ञा मानी, और साहस करके खड़े हो गए । गुरिल्ले के मुंह से फेन बह रहा था; उसकी बड़ी बड़ी आंखें चमक रही थीं; उसके विशाल बाहु वायु को चीर रहे थे, और वह सीधे इन्हीं लोगों की ओर चला आता था ! उसके हांफने और गर्जन करने से समग्र वन गूंज रहा था । दो तीन मिनट में वह इन लोगों से १० या १२ हाथ के अन्तर पर रह गया; और वहां से उछला ही था कि जून ने काँपते हुए स्वर में कहा—फ़ायर · ......"

धायँ......धायँ...एँ-एँ-एँ एँ-एँ ! दोनों गोलियाँ साथ ही साथ छूटीं । उनके छूटने की आवाज सामने की पहा-

ड्डियों से टकरा टकरा कर घाटी भर में गूंज उठी। जानवर का शरीर गोलियों से छिद गया। वह तुरन्त गिर पड़ा और मर गया।

जून और उसके दोनों नौकर गोली मारते ही डर कर गिर पड़े थे। अब गुरिल्ले के गिरने पर डरते हुए उठे। तीनों अभी तक थर थर काँप रहे थे।

बार्न। (काँपते हुए) देखो वह मारा गया; पर सच पूछो तो मैंने यही समझा कि आज ही हमलोगों की मृत्यु होगी।

जून। हमलोगों के मारे जाने में संदेह ही क्या था! वह तो कहो अभी संसार में कुछ दिन और रहना बदा है।

यह कह कर तीनों गुरिल्ले के मृतक शरीर को घेरकर देखने लगे। उनमें से कोई यह नहीं कह सकता था कि मनुष्य ने कभी इससे भी बड़ा गुरिल्ला देखा होगा। अब भय की कोई बात नहीं थी; अतएव इनको भूमि खोदकर हीरा निकालने की पुन: चिन्ता हुई, पर उसी क्षण जून ने घबराहट से चिल्ला कर कहा—

जून—भगवान ही रक्षा करें! आफत पर आफत!

सामने से एक दूसरा गुरिल्ला आता दिखाई दिया। यह पहले (गुरिल्ले) से मोटाई में किसी प्रकार कम नहीं था। जून को यह देखकर कि उसके पीछे एक दूसरा

गुरिल्ला भी आ रहा है और भी भय और विस्मय हुआ। दो तीन सेकण्ड के भीतर ही भीतर छः गुरिल्ले आते दिखाई दिए !

जून ने सोचा कि इन भयानक जानवरों से पहले ही हवाईनाव तक पहुंच जाना चाहिए, क्योंकि यदि ये जंगली पशु हवाईनाव तक पहुंच जायँगे तो उसको खण्ड खण्ड करके नष्ट कर डालेंगे। अतः उसने कहा — "दौड़ कर हवाईनाव तक जानवरों से पहले पहुंच जाना चाहिए।"

गुरिल्ले यह देखकर कि उनका एक साथी मरा पड़ा है भयानक चीत्कार करते हुए दौड़े। वे बड़े वेग से दौड़ सकते थे। उनके हाथ पाँव बहुत बड़े तथा लम्बे थे, किन्तु वे दूर थे, और हमारे हवाईनाववाले उनकी अपेक्षा नाव से बहुत समीप थे, इसलिये उनसे पहले ही नाव पर पहुंच गए।

नाव पर पहुंचते ही वार्ने ने जून की आज्ञा से हवाईनाव उड़ानेवाली पहिया घुमाई। यहां पर हम यह लिख देना उचित जानते हैं कि इसमे पहले ही जँगले से बिजली का असर दूर कर दिया गया था। हवाईनाव के उड़ते उड़ते दो बड़े बड़े गुरिल्ले दौड़कर उछले, और जँगले के साथ चिमट गए, किन्तु साथ ही हवाईनाव डगमगाई और एक ही क्षण में पृथिवी से १०० गज को ऊँचाई

पर दिखाई देने लगी । दोनों गुरिल्ले भी जँगले से चिमटे चिमटाए चले गए।

पोम्प ने देखा कि यदि देर की जायगी तो दोनों गु-रिल्ले जँगला पार करके नाव पर चले आवेंगे, अतएव वह कोठरी में से एक पैनी कटार ले आया, और कठोरहृदय होकर गुरिल्लों के पञ्जों पर वार किया ! उनके पञ्जे कट गए, और दोनों अधमूए होकर नीचे पृथिवी पर गिर पड़े। ये तीनों गुरिल्लों का तमाशा देखने के लिये नाव के जँगले पर आ झुके।

गुरिल्ले धमाके के साथ नीचे गिरते ही मर गए। अब हवाईनाव ऊपर चढ़ी जाती थी; यहां तक कि पृथिवी से १००० फीट की ऊँचाई पर ठहरा दी गई। अब तीनों के मन में यह विचार उदित हुआ कि क्या करना चाहिए। जून विकल हो चारो ओर देख रहा था।

बार्नें। यदि हमलोग पुनः नीचे उतरेंगे तो गुरिल्ले हमसे अवश्य बदला लेंगे।

नीचे से गुरिल्ले कोप की दृष्टि से हवाईनाव को देख रहे थे। उस डरावने स्थान में नाव को पुनः उतारना इन लोगों ने उचित नहीं जाना। इतने में जून ने घाटीके दूसरे ओर पर एक चीज देखी। घाटी की भूमि से २०० फिट की ऊँचाई पर एक बहुत बड़ी झील दिखाई दी। जान

पड़ता था कि वह नदी जो हीरों की घाटी के बीच से बहती है इस चौड़ी झील से मिली हुई है। झील को देख कर जून प्रसन्न हुआ।

झील के एक किनारे पर जंगली लोगों के असंख्य झोपड़े बने हुए थे। यथार्थ में जंगलियों के जितने गाँव रास्ते में दिखाई दिए थे, उनमें से किसी में इतनी घनी बस्ती नहीं थी; इसलिये यदि इसको जंगलियों के गाँव के बदले जंगलियों का नगर कहें तो अत्युक्ति न होगी। यहां पर २००० से भी अधिक झोपड़े थे; और यहां के निवासी इधर उधर घूमते तथा अनेक प्रकार के उद्यम में लगे दिखाई देते थे। ऐसे भयानक स्थान में मनुष्यों की बस्ती देख कर जून को बड़ा आश्चर्य हुआ; और उन लोगों से परिचित होने की इच्छा प्रबल हुई। जून ने सोचा कि इस जंगली देश में इन लोगों से बहुत कुछ काम निकलने की आशा है।

बार्नें ने उस ओर देख कर कहा—"मैं अनुमान करता हूं कि वे सब भी गुरिल्ले होंगे।"

जून—बेवकूफ कहीं का! हवाईनाव को उसी ओर ले चलो, और वहीं ठहराओ।

हवाईनाव उसी ओर चलाई गई, और वहां पहुंचने पर नीचे उतारी गई। उसको जंगलियों ने देखा, और देखते ही भयातुर हो घबरा कर इधर उधर दौड़ने लगे।

हवाईनाव जैसी नवीन वस्तु को देखकर उनके मन में अनेक प्रकार की शङ्काएँ उदित हुईं।

वार्न। देखिए, अभी से हमलोगों को देख कर वे डर गए।

जून नाव के जंगले के पास आया, और उसने अपने दोनों हाथों को इस वास्ते ऊँचा कर दिया कि उन डरे और आश्चर्य में डूबे हुए जंगलियों को मालूम हो कि हम लोग उनके साथ मित्रता का, न कि शत्रुता का व्यवहार करेंगे।

हवाईनाव गांव से लगभग १०० गज की अन्तर पर एक स्वच्छ जगह उतारी गई थी। जून को इस बात का बिलकुल डर नहीं था कि जंगलियों से हमलोगों को लड़ना पड़ेगा। उसने अनुमान किया कि जब अजदहे और गुरिल्ले जैसे भयानक जन्तुओं से बच कर निकल आए हैं तो ये जंगली मनुष्य क्या कर सकते हैं।

सब जंगली अपने अपने झोपड़े में घुस गए; भीतर से द्वार बन्द कर लिया, और बाहर निकलने से डरते रहे।

जून निर्भय होकर नाव पर से उतरा, और बहादुरी के साथ जंगलियों के झोपड़ों की ओर चला। वह अपने साथ छोटी छोटी अनेक वस्तुएँ भी लेता गया था, जिनको उसने जंगलियों के द्वार पर नजराने के तौर पर फेंकना आरम्भ

किया। जंगलियों ने सोचा कि "यह भी तो मनुष्य ही है, कोई अन्य जीव तो हैं ही नहीं!" और यह सोचकर हिम्मत करके धीरे धीरे झोपड़ों से बाहर आने लगे।

थोड़ी ही देर में उनमें और हमारे हवाईनाव वालों में परिचय हो गया। उनके विशाल शरीर पिशाच के समान थे; उनके सिर बहुत ही छोटे और रूप महा भयङ्कर था; तथा उनकी धँसी हुई छोटी छोटी आँखों से निर्दयता झलकती थी।

सङ्केतवार्त्ता के द्वारा जून को विदित हुआ कि ये लोग इस घाटी को पवित्र घाटी समझ कर यहां रहते हैं, किन्तु अजदहों और गुरिल्लों से बहुत डरा करते हैं। जून को यह भी मालूम हुआ कि हमलोगों से पहले भी कुछ गोरे यहाँ आ चुके हैं। जंगली-सर्दार, जून को एक ऐसे स्थान में ले गया जहाँ भूमि में बहुत से खूंटे गड़े थे और प्रत्येक खूंटे पर मनुष्यों की खोपड़ियाँ टँगी हुई थीं। जून ने तुरन्त पहचान लिया कि ये खोपड़ियां "काकेशिया" देश के लोगों की हैं। सब १४ खोपड़ियां थीं।

सहसा जून चौंक उठा और डर ने उस पर अपना अधिकार जमाया! उसको मालूम हो गया कि ये ही वे जंगली लोग हैं जिन्होंने अन्वेषियों के दल के दल का संहार किया था; और जिस दल का केवल एक मनुष्य जीवित

लौटकर घर पहुंचा था; तथा जिसकी द्वारा यहां का आ-श्चर्यमय वृत्तान्त सुन कर मैंने (जून ने) यहां तक आने के निमित्त हवाईनाव तय्यार की था।

दशवाँ प्रकरण।

यह निश्चय करते ही कि ये ही वे लोग हैं जिन्होंने अ-ङ्गरेजियों को मारा था, जून के चित्त पर कैसा प्रभाव पड़ा होगा इसको पाठकगण स्वयं अनुमान कर सकते हैं। उ-सने पहले यही सोचा कि इनको कुछ दण्ड देना चाहिए, किन्तु शीघ्र ही उसका ख्याल बदल गया और अब उसने अपने मन में यह कहा कि हवाईनाव भली प्रकार दिखा इन जंगलियों को विश्वास दिलाना चाहिए कि हमलोगों में कोई दैवी शक्ति है। अतः वह अपने साथ ४ जंगलियों को हवाईनाव को दिखलाने के लिये नाव पर ले गया।

बड़ी भूल हुई। जंगलियों की तीक्ष्ण दृष्टि और धूर्त प्र-कृति ने हवाईनाव के हरएक कल पुर्जे को व्यवहार में लाना भली प्रकार से समझ लिया; और इस बात पर वि-श्वास करने की अपेक्षा कि जून में कोई दैवी शक्ति है उ-नको निश्चय हो गया कि ये भी तो हमी लोगों की तरह मनुष्य हैं; क्योंकि वे जानते थे कि मनुष्य अपने बुद्धिबल से

नाना प्रकार की नवीन कलों का निर्माण कर सकता है। केवल इतना ही नहीं, वरन हवाईनाव छीन लेने की भी उनकी इच्छा हुई।

जंगलियों की सब से पहली और प्राकृतिक धूर्तता यह थी कि इन लोगों से खूब मित्रता बढ़ावें। अतएव वे सब हवाईनाव पर मित्रभाव से आने जाने लगे। बार्न्स और पोम्प ने उन्हें बहुत सी चीजें देकर बदले में छोटे छोटे चमकीले हीरे लिये। ये दोनों इतने सस्ते मोल पर हीरों को पाकर बड़े प्रसन्न हुए, किन्तु जंगलियों की धूर्तता का इनको किञ्चिन्मात्र भी ध्यान नहीं था।

दो दिन तक हमारे यात्री लोग जंगलियों के ग्राम में ठहरे रहे। जून की इच्छा पुनः हीरों की घाटी में जाने की हुई। जंगली सर्दार ने उसको विश्वास दिला दिया कि हीरे दूसरी जगह नहीं मिलेंगे।

दूसरे दिन घाटी के इस छोर पर हीरों के निकालने का सब प्रबन्ध ठीक कर दिया गया (क्योंकि दूसरे छोर पर गुरिल्ले रहते थे और जंगली वहां जाने से बहुत डरते थे)। तीसरे दिन प्रातःकाल जून ने जंगली-सर्दार को १२ साथियों के सहित अपनी ओर आते देखा।

वे सब बेधड़क हवाईनाव पर चढ़ आए। जून को यह देखकर आश्चर्य मालूम हुआ, क्योंकि जंगली लोग आज से

पहले नाव पर डरते डरते आया करते थे । वार्नें कोठरी में था, और पोम्प तथा जून नाव के अगले भाग में कोठरी के बाहर टहल रहे थे । जंगली-सर्दार ने जून को हाथ के संकेत से बुलाया । जून यह समझ कर कि वह कुछ बात-चीत करने के लिये बुला रहा है, उसके समीप गया । जून का वहाँ पहुँचना था कि सर्दार ने अपने आदमियों को ललकारा; और साथ ही वे सब भूखे भेड़ियों की तरह जून पर टूट पड़े ।

जून पटक दिया गया, और एक ही मिनट में उसने अपने हाथों और पैरों को कैदियों की तरह बँधा पाया । एक प्रकार का घृणायुक्त भय उसके मुख पर छा गया; और उसने अपनी मूर्खता पर ध्यान दिया । पोम्प को भी जंगलियों ने पकड़ लिया । उसके हाथ पैर भी बांध दिए गए; किन्तु वार्नें बच गया । वह कोठरी में तो था ही; बस झपट कर द्वार भीतर से बन्द कर लिया । द्वार बड़ा मजबूत था । जंगली उसको नहीं तोड़ सके ।

कोठरी की खिड़कियों में लोहे के छड़ लगे हुए थे, इस कारण वे इस राह से भी न घुस सके । वार्नें ने जून से पुकार कर पूछा—"कहिए, अब मैं क्या करूं ? यदि बाहर आऊँगा तो ये सब मुझको भी पकड़ कर बेबस कर देंगे ।"

जून ने तत्काल सोच कर उत्तर दिया—"पहिया घुमाओ, और हवाईनाव को तुरन्त आकाश में ले चलो ।"

बार्न ने वैसा ही किया। पहिया घूमने लगी। हवाई-नाव सहसा हिली, और पलक झपकते में पृथिवी से १००० फीट ऊँची हो गई। इसका प्रभाव जंगलियों पर वैसा ही पड़ा जैसा कि इन लोगों ने सोचा था। अर्थात् वे सब बहुत डर गए, और अपने दोनों कैदियों को छोड़ जँगले पर झुक कर नीचे का दृश्य देखने लगे। जून और पोन्य दोनों बच गए। बार्न ने कोठरी का द्वार खोल दिया। दोनों लड़खड़ाते हुए पैरों से भीतर घुस गए। बार्न ने इनके हाथ पैर का बन्धन काट दिया।

इस समय जंगली लोग दाँत कटकटा कटकटा कर विचित्र प्रकार के मुंह बना रहे थे। बार्न ने कहा—"देखो हमलोगों ने इन सभों को कैसा बेवकूफ बनाया।"

जून ने हवाईनाव को हीरों की घाटी के ऊपर उस जगह ठहरा दिया जहाँ गुरिल्ले मरे पड़े थे। यहाँ पर वह हवाईनाव को नीचे उतारने लगा। यहां तक कि नाव पृथिवी से केवल २५ फीट ऊपर रह गई।

इस समय और कई गुरिल्ले आ गए थे, जिन्होंने नाव को देख भयानक चोत्कार मचा कर जंगल को गुंजा दिया। जंगलियों ने नाव से नीचे कूद जाने का विचार किया, परन्तु गुरिल्लों के डर से फिर वहीं ठिठक रहे।

जून ने कोठरी की खिड़की में से हाथ निकाल कर

उनको नीचे कूद जाने का आदेश किया. परन्तु वे डर के मारे नाव के जँगले से चिमटे के चिमटे ही रह गए।

वार्ने। वे सब नीचे कूदने से डरते हैं. क्योंकि कूदते ही गुरिल्ले उनको फाड़ खायँगे।

जून। देखो कैसे नहीं कूदते।

यह कह कर जून ने काल घुमाया। बिजली का असर जँगले भर में फैल गया। बारहों जंगली जँगला छोड़ धड़ाम से पृथिवी पर जा गिरे। गिरते ही उठे और सिर पर पैर रख कर (बड़े वेग से) भागे किन्तु गुरिल्लों ने उनका पीछा किया।

जून ने हवाईनाव को ५० फीट ऊपर उठा लिया। इस बीच में गुरिल्लों ने अपने आखेट को चारो ओर से घेर लिया था। एक ओर नदी बहती थी। जंगलियों ने नदी में पैर कर निकल भागना चाहा लेकिन केवल ३ जंगली सफलमनोरथ हुए; शेष ८ को गुरिल्लों ने धर पकड़ा; उनको मार डाला, और उनके मृत शरीर को जंगल में घसीट ले गए।

तीन जंगली नदी में कूद कर गुरिल्लों से बच गए। वार्ने ने गोली मार कर उन तीनों को भी यमलोक पठाने का विचार किया, परन्तु जून ने उसको मना किया, और कहा कि—"इनको छोड़ दो।"

वार्ने। अब क्या करना चाहिए?

जून। मैं सोच रहा हूं कि यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यहाँ का धन कोई नहीं ले जा सकता: क्योंकि देखो कैसे कैसे विघ्न उपस्थित होते हैं!

इसके अनन्तर ये लोग बड़ी देर तक विचार करते रहे कि अब क्या करना चाहिए, किन्तु इसके सिवाय कि गुरिल्लों को मार कर निष्कण्टक हो हीरा निकालें कोई उत्तम युक्ति नहीं सूझी। यह कोई साधारण काम नहीं था। जून ने अनुमान किया कि जंगल में और पहाड़ों की गुफाओं में असंख्य गुरिल्ले होंगे, तिस पर भी वह अपने विचार पर दृढ़ रहा. और गुरिल्लों से लड़ने के लिये अपने अस्त्रों को सम्हाल ही रहा था कि सहसा उसकी दृष्टि उस ओर उठ गई जिधर जंगलियों का गाँव था। उसने देखा कि घाटी के उस छोर पर बहुत धुआँ उठ रहा है। यह क्यों? धुआँ उठने का क्या कारण? अवश्य ही आग लगने से इतना धुआँ पैदा हो सकता है। कोई अन्य कारण नहीं है।

जून ने कहा—"यह क्या बात है?"

वार्ने। जान पड़ता है कि आग लगी है।

जून। हां, पर जलती क्या चीज़ है?

वार्ने। इसको मालूम करने में आपको क्या देर लगेगी!

जून। ठीक है, मैं तुम्हारा मतलब समझ गया।

जून ने कोठरी में पहुंच कर पहिया घुमाई। हवाई-नाव ऊपर की ओर उछली। अब सब बातें स्पष्ट दीख पड़ने लगीं। जंगलियों के गांव का गांव जल रहा था! ओह! वह बड़ी ही भयङ्कर अग्नि थी! बराबर बढ़तीही जाती थी।

जून। यह क्या मामला है?

वार्न। हवाईनाव को और निकट ले चलना चाहिए।

जून। मेरी भी यही इच्छा है।

हवाईनाव उसी ओर चली। कई मिनटों के उपरान्त सब बातें प्रगट हो गईं, अर्थात् झील के किनारे पर भयानक युद्ध हो रहा था। मजूटों (एक लड़ने भिड़नेवाली जंगली जाति) ने गांववालों पर आक्रमण किया था। वस्तुतः लड़ाई बड़ीही विकट थी।

हवाईनाव ठीक उस स्थान के ऊपर जहां युद्ध हो रहा था, ठहराई गई। दोनों दलवाले जी जान से लड़ रहे थे, परन्तु मजूटों की संख्या अधिक थी, और वे बलिष्ट भी थे।

वार्न। हमलोगों को इस लड़ाई में किसी दल की सहायता न करनी चाहिए। वे लोग जिस प्रकार चाहें लड़ें, मरें, कटें या मित्रता कर लें।

जून। हां, तुम्हारा कथन बहुत ठीक है। हमलोगों को हस्तक्षेप करने से कुछ भी लाभ नहीं है।

जून यदि चाहता तो अपने बिजली के यन्त्रों को स-

हायता से दोनों दल में से किसी एक को विध्वंस करके दू-
सरे को जिता दे सकता था, किन्तु इससे उसका कुछ लाभ
नहीं होता । न उसको यह जानकर हर्ष था कि मजूटे
विजयी होंगे, क्योंकि वह जानता था कि मजूटे गोरों के
पुराने शत्रु हैं. और दुष्ट गांववालों ने पहले ही धूर्त्तता की
थी। फलतः उसको किसी दल के मनुष्यों से मतलब नहीं
था। वह चुपचाप लड़ाई देख रहा था, जो इस समय और
भी भयंकर हो गई थी।

ग्यारहवाँ प्रकरण ।

मजूटे युद्धविद्या में निपुण जान पड़ते थे। वे अपने श-
त्रुओं को होरों को घाटी के उस ओर दबाए हुए थे, जि
धर झील थी।

वहां की भूमि ढालुईं थी; और यदि जंगली लोग
घाटी के नीचे ढकेल दिए जाते तो उनको मृत्यु निश्चित
थी। दोनों ओर से भयानक युद्ध हो रहा था, किन्तु सर्दार
के न रहने के कारण जंगली सेना शिथिल होती जाती थी।
अन्त में वह शत्रुओं द्वारा पवित्र घाटी के नीचे ढकेल दी
गई। परन्तु वहां पर जंगलियों को ऊँची नीची भूमि मिल
गई, और वे बराबर नीचे तक लुढ़कने से बच कर वहीं
रुक गए, और पुनः सम्हलकर लड़ने लगे।

इस समय न मालूम क्या सोच कर मजूटों ने अपनी ओर से लड़ाई धीमी कर दी. और उनमें से आधे से अधिक घाटी के उस ओर चले गए जिधर पत्थर की एक बहुत बड़ी शिला पानी को घाटी में बह आने से रोके हुए थी। मजूटे इस चट्टान को किसी प्रकार वहां से हटा देना चाहते थे। उनकी यह इच्छा थी कि झील का पानी घाटी में उतर आवे, और सब जंगली डूब कर मर जायँ।

जून यह देखकर बहुत घबराया, और सोचने लगा कि मजूटों को किसी तरह इस काम से रोकना चाहिए, पर अब समय नहीं था। वह करुण स्वर में बोल उठा—"हाय! अब हमलोग हीरे नहीं पा सकेंगे।"

इसके अनन्तर सहसा तोप छूटने का सा शब्द हुआ! मजूटों ने उस बड़ी चट्टान को जिसका वृत्तान्त ऊपर लिखा चुका है, अपनी जगह से हटा दिया; और अब झील का पानी भयानक नाद करता हुआ घाटी में आने लगा। जंगली बहुत घबराए, और ऊँची भूमि खोजने लगे किन्तु जल उन तक पहुंच गया, और वे ऊपर न चढ़ सके।

झील का जल घाटी के दूसरे छोर तक पहुंच कर रुक गया, क्योंकि वहाँ की भूमि बहुत ऊँची थी। गुरिल्ले भाग भाग कर पहाड़ों में चले गए। झील ने एक जगह छोड़

दूसरे स्थान पर अपना डेरा जमाया। जंगली लोग डूब कर मर गए। मजूटे ऊँची भूमि पर होने के कारण बचे रहे। जवहरात की घाटी ५ ही मिनट के भीतर भीतर जल में डूब गई। वहां के अमूल्य रत्न सदा सर्वदा के लिये जलमग्न हो गए! इन्हीं बातों को सोच कर जून ने मजूटों को पत्थर की चट्टान हटाने से रोकना चाहा था। मजूटे इस समय अपने शत्रुओं अर्थात् जंगली लोगों के जले हुए गाँव को लूट रहे थे।

जून ने एक लम्बी साँस खींच कर उस निस्तब्धता को जो बहुत देर से छाई हुई थी इस प्रकार भङ्ग किया—

जून। सब परिश्रम व्यर्थ हुआ। जवाहरात की घाटी, और वहां के हीरे सदैव के लिये पृथिवी में गड़ गए।

पोम्प। हां, किन्तु "हरेरिच्छा बलीयसी।" हमलोगों को दुःखित न होना चाहिए।

वार्ने। (जल्दी से) वह देखिए सामने की जमीन जल में नहीं डूबी है, शायद वहाँ हीरे मिलें।

जून को विश्वास नहीं था कि वहाँ की भूमि में हीरे मिलेंगे, परन्तु साथियों के कहने से वह वहाँ चलने पर तय्यार हो गया; किन्तु उस जगह मजूटों का दल था, और उनसे बचने का उपाय भी पहले ही से कर लेना उचित था, अतएव जून नाव के जँगले के पास आया और मजूटों

को लक्ष्य करके गोली मारी । गोली सरसराती हुई चली गई, और मजूटे बड़े वेग से भागे। दूसरी गोली के पहुंचते पहुंचते वे नेत्रों से एकबार ही लोप हो गए।

सामने का मैदान साफ हो गया। हवाईनाव उस स्थान पर जहाँ पहले झील थी उतारी गई। यहाँ पर अब भी कहीं कहीं जल की छोटी छोटी अनेक धारायें मन्द गति से बह रही थीं।

जून, नाव पर से उतरकर भूमि पर टहल रहा था कि सहसा उसकी दृष्टि एक ऐसी चमकीली वस्तु पर पड़ी जिसका अर्ध भाग भूमि में गड़ा हुआ था। जून ने प्रसन्न होकर उसको उठा लिया। यथार्थ में वह उसके अँगूठे के नाखून के बराबर एक बहुमूल्य हीरा था।

जून। हर्ष का विषय है कि घाटी के डूब जाने से हम लोगों को कुछ हानि नहीं हुई, क्योंकि यहाँ आते ही एक ऐसा रत्न मिला जिसका मूल्य दस सहस्र रुपये से अधिक होगा; और अभी बहुत कुछ आशा है।

वार्न और पोम्प उस बहुमूल्य पत्थर को आश्चर्य और प्रशंसा की दृष्टि से देखने लगे। पुन: पृथिवी खोदी जाने लगी, परन्तु एक हीरा भी नहीं मिला। दो दिन तक ये लोग सपरिश्रम अपना काम करते रहे, परन्तु कृतकार्य्य नहीं हुए। अन्त में विवश होकर उनको वह काम एकबार ही छोड़ देना पड़ा।

जून । क्या हमलोगों को यही एक हीरा मिलना था ?

वार्ने । ऐसा ही जान पड़ता है ।

जून । खैर, एक बार हमको फिर उद्योग करना चाहिए; यदि फिर भी हतमनोरथ होंगे तो यहाँ से लौट चलेंगे । क्योंकि—"उद्योगी सफल: कार्य्य: ।"

पुन: ये लोग कार्य्यक्षेत्र में अग्रसर हुए, किन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ । अन्त में यहाँ से लौटने की तय्यारी हो ही रही थी कि थोड़ी दूर से किसी का करुणोत्पादक स्वर सुन पड़ा ।

पोम्प और जून ने पलट कर एक विलक्षण दृश्य देखा, अर्थात् वार्ने अपनी गर्दन तक एक दलदल में फँस गया था । जान पड़ता था कि थोड़ी ही देर में वह उसमें बिलकुल धँस कर एकबार ही अन्तर्धान हो जायगा ।

तत्काल जून ने उस लम्बी डाँड़ी लगे हुए फावड़े को जिससे भूमि खोदी जाती थी दलदल के ऊपर फेंका, और कहा—"वार्ने ! घबराने से कोई काम नहीं चलेगा । तुम इस डण्डे को मजबूती से पकड़ लो; हमलोग तुम्हें दलदल के बाहर खींच लेंगे ।"

वार्ने ने डंडे को दोनों हाथों से पकड़ लिया, और बाहर खींच लिया गया, परन्तु इस समय उसको देखने से डर लगता था, क्योंकि उसका शरीर कीचड़ से भरा हुआ था, और वह स्वयं एक भूत मालूम पड़ता था ।

वार्नें को अपना शरीर साफ करते कई मिनट लगे। जब वह साफ हो गया तो जून ने हवाईनाव के निकट आ कर कहा—"इस जगह ठहरने की कुछ आवश्यकता नहीं है; अब यहाँ से चलना ही चाहिए।"

परन्तु यह निश्चय हुआ कि चारो ओर घूम घूम कर सैर करके तब इस जगह को छोड़ना चाहिए। अत: जून तथा वार्नें सैर करने चले गए, और पोम्प हवाईनाव की रक्षा करने के लिये वहीं ठहर गया। घूमते घूमते इन लोगों को भागे हुए मजूटों का एक छोटा दल मिला, परन्तु वे सब इन्हें देखकर दूर ही से भागे। आगे चल कर एक गुरिल्ला भी दिखाई दिया, परन्तु वह भी इनको बिजली की बन्दूक द्वारा मारा गया। जून ने रास्ते में ठहर कर दो एक स्थान की भूमि में हीरे भी खोजे, किन्तु कार्य्य सिद्ध नहीं हुआ।

एक घण्टे में दोनों पुनः नाव के पास लौट आए। तब जून ने कहा—"इतना कष्ट उठा कर यहां पहुंचने पर भी खजाना हमलोगों के हाथ से छिन गया; तौभी हमलोग घाटे में नहीं रहे।"

जून का कथन सत्य था। वह हीरा जिसको उसने बालू में पाया था दुष्प्राप्य और बहुमूल्य था। उसके अतिरिक्त कई हीरे जँगलियों से बदले में मिले थे।

जून। ओह! देखो, क्षण भर में जंगलो [illegible] जल में डूब गए। हीरों की घाटी सदा सर्वदा के हेतु जल में मग्न हो गई। यहाँ के बहुमूल्य रत्नों को अब कोई नहीं पा सकता है। वार्नें! यहाँ से हवाईनाव को ले चलो; ठहरना व्यर्थ है।

वार्नें। रीड्सटाउन की ओर ले चलूं?

जून। नहीं।

वार्नें। तब कहाँ चलना होगा?

जून। रायोनिगरो यहाँ से बहुत दूर नहीं है; वहाँ से अमेजन की सैर करते हुए रायोजनरो और वहाँ से घर चलेंगे।

वार्नें और पोम्प दोनों बड़े प्रसन्न हुए। दूसरे दिन हवाईनाव जवाहरात की घाटी से रवाना होकर रायोनिगरो की ओर चली।

बारहवाँ प्रकरण।

हवाईनाव रायोनिगरो की ओर चली। मार्ग में नाना प्रकार के दृश्य दृष्टिगोचर हुए। बड़े बड़े वन पीछे छूटे। किसी वन में महोग्नी के वृक्ष थे। किसी में सरो, किसी में बलूत, और किसी में किसी अन्य प्रकार के पेड़ लगे हुए थे; तथा किसी स्थान की भूमि सैकड़ों प्रकार के झाड़ झंखाड़ और कँटीले वृक्षों से ढँकी हुई थी।

ये लोग निश्चिन्तता के साथ सब दृश्य देखते चले जा रहे थे। यदि नीचे वनों में मनुष्यभक्षक जंगली पशुओं का निवास होता तो इनको कुछ हानि नहीं थी, अथवा यदि सर्पादि विषैले जन्तु होते तो भी इनको किसी प्रकार की क्षति न पहुंच सकती थी। ये निःशङ्कचित्त हवाईनाव पर बैठे थे; अतः इनको किसी प्रकार का भय नहीं था। यदि कभी हवाईनाव को देखकर कोई वनपशु गुर्राता वा उछ-लता कूदता तो ये केवल हँस देते, क्योंकि हवाईनाव तक कोई जानवर नहीं पहुंच सकता था।

कुछ दिनों तक हवाईनाव बराबर इसी प्रकार चली गई। रात्रि समय जून इत्यादि कोई अच्छी जगह देख कर वहीं टिक रहते और और प्रातःकाल पुनः कूच करते थे। ऐसे समय में इन लोगों को अनेक तरह की अद्भुत वस्तुएँ प्राप्त होती थीं।

वार्ने ने एक सुन्दर सफेद बन्दर पकड़ा था; पौम्प ने रंगविरंगी परवाली बहुत सी चिड़ियाँ एकत्र की थीं; और जून को एक ऐसी लकड़ी मिली थी जो रात्रि समय दीपक का काम देती थी। कभी कभी भेड़िये गुर्राते हुए हवाईनाव के निकट आते थे किन्तु ये लोग निर्भय हो नाव की कोठरी में सुख से सोए रहते थे। कभी कभी वार्नें और पौम्प भीतर ही से गोली चलाकर उनको भगा भी देते थे।

हमारे यात्री लोग इसी प्रकार टिकते टिकाते चले जाते थे; यहाँ तक कि कुछ दिन में रायोनिगरो और अमेज़न के सङ्गम के निकट पहुँच गए। अब इन लोगों को पीछे छूटे हुए देशों की अपेक्षा बहुत बड़ा देश दीख पड़ा। पर्वतमालायें और घने वन दृष्टिगोचर हुए। दो दिन तक हवाईनाव बराबर नदी के ऊपर ही ऊपर चली गई। ज्यों ज्यों आगे बढ़ते थे त्यों ही त्यों नदी अधिक चौड़ी मिलती थी। किसी किसी जगह उसकी चौड़ाई देख कर समुद्र का धोखा होता था। तीसरे दिन जून ने एक ऐसा स्थान देखा जो तीन ओर जल से घिरा हुआ था। यह एक घना जंगल था।

जून ने हवाईनाव को इसी जगह उतारने के लिये पोम्प से कहा, क्योंकि यद्यपि यह वन था किन्तु जहाँ लों अनुमान किया गया तहाँ तक यही निश्चय हुआ इस जगह भयानक जंगली जन्तु नहीं हैं। हवाईनाव एक साफ जगह उतारी गई; बगल में महोग्नी के बड़े बड़े वृक्षों की डालियाँ हवा में झूम झूम कर लहरा रही थीं।

सन्ध्या होने में अब अधिक विलम्ब नहीं था। ठण्डी ठण्डी हवा चित्त को प्रफुल्लित कर ही रही थी। चारों ओर का जंगल बड़ा ही सुहावना सुहावना दीखता था। वार्न ने आग जलाई, और पोम्प ने वन के बीच जाकर एक हरिण

मारा, किन्तु लौटते समय मार्ग में उसने पृथिवी पर मनुष्य के पैरों के सैकड़ों चिन्ह देखे।

पहले पोम्प ने सोचा कि ये पदचिन्ह किसी वनपशु के होंगे जो नदी में जल पीने गया होगा, किन्तु तत्काल उसे निश्चय हो गया कि नहीं, ये मनुष्य के पैरों के चिन्ह हैं; और वह भयभीत हो आप ही आप बोला—"मैं इन चिन्हों का वृत्तान्त मिष्टर जून से अवश्य कहूंगा; कदाचित् वह इनसे कुछ मतलब निकालें।" अतः पोम्प ने जाकर जून से सब ब्योरा कह सुनाया। जून ने आश्चर्यान्वित हो कहा—"यहां मनुष्य के पदचिन्ह का मिलना आश्चर्य में डालता है, क्योंकि मैं भली प्रकार जानता हूं कि जंगलियों का प्रदेश सहस्रों मील पीछे छूट गया।"

यह कह कर जून ने अपनी बन्दूक सम्हाली, और उस मार्ग को जाँचने चला। चिन्हों को देखते ही वह चौंक पड़ा; और कुछ दूर तक बराबर चला गया। सहसा उसकी दृष्टि एक नाले पर पड़ी। यह नाला अमेज़न (नदी) से मिला हुआ था। जून ने पदचिन्ह वहीं तक पाए। ये चिन्ह वस्तुतः मनुष्य के नंगे पैरों के थे। पश्चात् जून हवाई-नाव की ओर लौटा; किन्तु अभी १० वा १५ पग बढ़ा होगा कि बगल की झाड़ी में से एक भीषण स्वर सुन पड़ा।

इस स्वर से जून परिचित था। एक ही मिनट के बीच में उसने छोटे छोटे पेड़ों के झुरमुट में एक बहुत बड़ा अजदहा देखा, जिसकी दो आँखें दो हीरों की भाँति चमक रही थीं। वह अजदहा आगे बढ़ा आता था। जून ने बन्दूक में गोली भरी, और जल्दी से एक ऊँचे वृक्ष पर चढ़कर उसकी डालियों और पत्तों की आड़ में छिप रहा। जून जानता था कि यदि मैं भूमि पर खड़ा रहूंगा अथवा छिपने के लिये दूसरी जगह खोजूंगा तो परिणाम बुरा होगा। जून को यह भी मालूम था कि बड़े अजदहे अपनी मोटाई के कारण पेड़ पर सहज ही नहीं. चढ़ सकते हैं। अतः जून पृथिवी से अनुमान २५ फुट ऊँचे एक वृक्ष पर जा बैठा, और बन्दूक भरकर तय्यार रक्खी कि यदि अजदहा पेड़ पर चढ़ने का उद्योग करे तो उसे मार कर नीचे गिरा दे; परन्तु ऐसा नहीं हुआ—अजदहे ने वृक्ष पर चढ़ने का उद्योग नहीं किया, किन्तु फुफकारियाँ मारता हुआ उसी पेड़ के नीचे से जिस पर जून बैठा था बड़े वेग से दौड़ा।

वह सीधे उसी ओर जिधर ह्वाईनाव थी दौड़ा जाता था। जून ने उसके पीछे एक गोली मारी, परन्तु फ़ायर करने से उसका तात्पर्य अजदहे के मारने का नहीं था, किन्तु वार्ने और पोम्प को यह जता देना था कि कोई

नई घटना सङ्घटित होनेवाली है। पश्चात् वह पेड़ से नीचे उतरा। उसने सोचा कि इस समय जल्दी करनी चाहिए। वह तनिक नहीं घबराया, किन्तु जिस ओर अजदहा गया था उसी ओर दौड़ा। कई मिनटों के उपरान्त उसने बन्दूकों के छूटने की आवाजें सुनीं। तब वह मन ही मन बोला—"जान पड़ता है कि अजदहा हवाईनाव तक पहुंच गया।"

वह पुनः प्रबल वेग से दौड़ा, और हवाईनाव के निकट पहुंच कर एक ऐसा दृश्य देखा जिससे वह एकदम घबरा गया। बोला कि—"बस, अब पोम्प का बचना असम्भव है।"

बात यह थी कि अजदहे ने पोम्प को पकड़ लिया था। वार्नें थोड़ी दूर पर भय के कारण भूमि पर अचेत पड़ा था। पोम्प यद्यपि फँसा था तथापि वह अपने लम्बे छुरे से अजदहे का भारी शरीर छेद रहा था।

अजदहे के बदन में से रुधिर के फुहारे छूट रहे थे, परन्तु वह पोम्प को नहीं छोड़ता था; और पोम्प इतना दबा हुआ था कि उसको साँस लेने में भी कठिनाई पड़ती थी। जून ने देखा कि यदि अब एक मिनट की भी देरी होगी तो पोम्प साँस रुकने के कारण मर जायगा। अतएव शीघ्रतापूर्व्वक बन्दूक में गोली भर कर जून ने फायर किया।

गोली जाकर अजदहे के सिर में लगी, और मस्तक को छेदती हुई दूसरी ओर निकल गई, किन्तु गोली लगते ही वह अजदहा पोम्प को लिए दिए लुढ़कता पुढ़कता नदी में चला गया। पोम्प भी उसी के साथही अन्तर्धान हो गया।

यह देख कर कि पोम्प जल में डूब गया जून के मुंह से एक चीख निकली—"हाय! विचारा पोम्प........."

जून ने अभी इतना ही कहा था कि पोम्प नदी में तैरता दिखाई दिया। दो तीन मिनट में वह किनारे पर आ लगा। वार्नें भी इस समय सचेत हो चुका था।

वार्नें। मुझको क्या हो गया था? (पोम्प के भींगे कपड़े देख कर) और तुम जल में क्यों गए थे?

पोम्प ने आद्योपान्त सब हाल कह सुनाया। पश्चात् बोला कि—"मेरी मृत्यु होने में तनिक भी सन्देह नहीं था, पर धन्य हैं मिष्टर जून जिन्होंने साहसपूर्वक मुझको काल के गाल से बचा लिया!

जून। यह सब बातें पीछे होती रहेंगी। अब हमलोगों को उचित है कि यहां से इसी समय कूच करें।

जून ने इतना कह कर होंठ पर होंठ रक्खा ही था कि सहसा एक तीर सनसनाती हुई उसके कान के पास से निकल गई!

पोम्प। यह क्या वस्तु थी जो उड़ती हुई हमलोगों के बगल से चली गई?

पोम्प की बात का उत्तर देने की कुछ आवश्यकता नहीं थी। तीनों ने उस ओर जिधर से तीर आई थी, देखा। एक नाव जिस पर बहुत से जंगली लोग छुरी कटारी बाँधे खड़े निर्निमेष नेत्रों से इन्हीं तीनों को निहार रहे थे, दृष्टिगत हुई। उन्हीं ने तीर चलाई थी, और उन्हीं में से एक का पदचिन्ह वन में देख कर पोम्प चिन्तित हुआ था।

जून और उसके साथी जंगलियों को देख ही रहे थे कि इतने में एक तीर और आई; तथा इसी प्रकार निरन्तर ८।१० तीरें आई।

जून। (साथियों से) अब यहाँ ठहरना ठीक नहीं है।

तदनन्तर सब के सब हवाईनाव की ओर बढ़े किन्तु ठीक उसी समय वायु बड़े वेग से बहने लगा! आकाश पहले पीत रंग का हो कर पीछे घोर अन्धकार से आच्छादित हुआ। झम झम वृष्टि होने लगी। मेघ गरजने लगा और दम दम में दामिनी भी दमक दमक कर दिल को दहलाने लगी।

जून इन सब का कारण जान गया। ओह! वह एक भयानक तूफान था! उसने जल्दी से चिल्ला कर कहा— "ओह! ओह! हम सब के सब इस तूफान में नष्ट हो जायँगे!"

तेरहवाँ प्रकरण ।

तीनों दौड़ कर हवाईनाव की कोठरी में जा घुसे। तूफ़ान बढ़ता जाता था। नदी की लहरें बाँसों उछल रही थीं। मिट्टी, कंकड़, पत्थर, बालू इत्यादिक हवा में उड़े जाते थे। असंख्य वृक्ष वायु की प्रबलता के कारण जड़ से उखड़ गए!

जून। (काँपते हुए) वायु प्रत्येक क्षण प्रचण्ड हुआ जाता है! कहीं वृक्षों की भाँति हवाईनाव भी टूक टूक न हो जाय।

सहसा हवाईनाव की दूसरी कोठरी में, जिसमें नाव के उड़ानेवाले यन्त्र थे, धमाके का शब्द हुआ; और एक यन्त्र कोठरी की छत को चीरता फाड़ता हवा में उड़ कर लोप हो गया। जून ने निराश होकर कहा—,

जून। हाय! हमलोग नष्ट हो गए! हवाईनाव का मुख्य यन्त्र टूट कर उड़ गया। अब नाव बेकाम हो गई। किसी प्रकार नहीं बन सकती है। हाँ, एक साधारण नौका का काम अलबत: दे सकती है। अस्तु,—"ईश्वर की जैसी इच्छा" इसका तो उतना शोक नहीं है; चिन्ता है तो इस बात की कि घर तक कैसे पहुंचेंगे। अमेरिका यहाँ से बहुत दूर है।

सहसा पुनः धमाके की आवाज आई और बिजली की यन्त्रवाली कोठरी ने यन्त्रों को लिए दिए तूफान का साथ दिया।

अब तूफान भी नहीं था। जैसे एक झोंके में आया था, वैसे ही दस ही मिनट में चला गया, किन्तु उसी समय एक विशालाकार वृक्ष टूट कर हवाईनाव पर गिरा, जिससे नाव का आधा भाग एकदम चकनाचूर हो गया।

तीनों अभागी कोठरी से वहिर्गत हुए। जून बोला कि, "अब हमलोगों की पूरी खराबी है।"

वार्ने—"हां, इस सूनसान स्थान में सब की मृत्यु होगी, क्योंकि अब यहां से निकलने की किसी प्रकार सम्भावना नहीं है।"

पोम्प भी अत्यन्त दुःखित हुआ, परन्तु जून साहसी था; उसने कहा,—"कोई दुःख की बात नहीं है। हमलोग सुख से घर पहुँच सकते हैं। पहले हम सब को मिल कर इस टूटी हुई हवाईनाव के तख्तों से एक सुदृढ़ नौका बनानी चाहिए।"

पोम्प और वार्ने भी सहमत हुए। उसी समय से तीनों ने उस काम में हाथ लगा दिया। निरन्तर ४ दिन के कठिन परिश्रम के उपरान्त एक छोटी डोंगी बन कर तय्यार हो गई। इस पर चढ़ कर जून ने किसी सभ्य देश में पहुँ-

चना चाहा; और यह भी सोचा कि यदि मार्ग में कोई जहाज मिल जायगा तो उसी पर सवार हो लेंगे।

उस जगह के छोड़ने की सब तय्यारी हो गई। तीनों ने मिल कर नूतन नौका को नदी तक खींच कर जल में ढकेल दिया। बची हुई आवश्यक वस्तुयें भी उसी पर लाद ली गईं, और ये लोग भी नौकारोहण कर घर की ओर चले।

दो दिन तक नाव खेते चले गए। बहुत दूर जाना शेष था। एक छोटी सी नौका में दूर देश की यात्रा कठिनाई से की जा सकती है। खुली नाव में रात्रि समय ओस और दिन में कड़ी धूप के कारण जो कष्ट होता उसको ये लोग सहन करते चुपचाप चले जाते थे।

दो दिन में ५० कोस की यात्रा हुई। तीसरे दिन एक धूमपोत (Steamer) दृष्टिगोचर हुआ। यह ष्टीमर 'स्पेन' का था। ष्टीमरवाले भले-आदमी थे, उन लोगों ने हमारे उद्योगी यात्रियों को अपने साथ ले लिया।

कई दिन के बाद ये लोग न्यूयोर्क पहुँचे। वहाँ से अपनी जन्मभूमि रीड्सटाउन में सुखपूर्वक जा पहुंचे। गाँव वाले इनको देख कर अतीव प्रसन्न हुए, किन्तु हवाईनाव के नष्ट हो जाने का वृत्तान्त सुन कर उनको किञ्चित दुःख भी हुआ।

जून ने कहा।—"हवाईनाव टूट गई तो क्या हुआ। यदि मैं जीवित रहा तो इससे भी उत्तम यन्त्र तय्यार करूँगा।"

माननीय पाठकगण! हमारी अनुवादित कहानी समाप्त हुई। भूल चूक के लिये क्षमाप्रार्थी हैं।